

अंक-26वाँ
सितम्बर
2015



चेतना



कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए (बाएँ से दाएँ) श्री मुकेश कुमार लाल, व० उ० म० ले० (प्र०), श्री संजय कुमार, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना, श्री जॉर्ज सैमूएल, उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि)।

खड़े हुए (बाएँ से दाएँ) श्री अभिजीत कुमार, स० ले० अ०, श्री भारत भूषण झा, व० ले० अ० (संपादक) मो० हाशिम अंसारी व० ले० अ० प्रधान संपादक, श्री श्रीराम पाण्डेय स० ले० अ०, श्री निरंजन कुमार सिंह, व० ले०।



चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
26वाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय, महालेखाकर भवन,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग, पटना - 800001

चेतना के इस 26वें संयुक्तांक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : 'चेतना'

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना -800001

अंक - 26वाँ (संयुक्तांक)
(दिसम्बर, 2014 से सितम्बर, 2015)

मुख्य पृष्ठ : बोध गया का प्राचीन बौद्ध मन्दिर

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : जी० बी० प्रिंटेर्स
पोपुलर प्लेस
लंगरटोली चौराहा, पटना-4

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री संजय कुमार
महालेखाकार

(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति,

श्री मुकेश कुमार लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

श्री जॉर्ज सैमुअल
उप महालेखाकार
(ले० एवं ह०), बिहार, पटना।

प्रधान सम्पादक
मो० हाशिम अंसारी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सम्पादक,
श्री भारत भूषण झा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री अभिजीत कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

सहायक सम्पादक
श्री चन्द्र मोहन मिश्र
वरिष्ठ लेखाकार

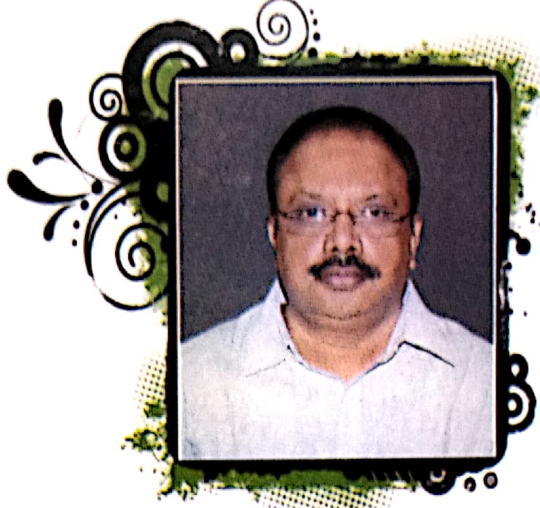
सहायक संपादक
श्री निरंजन कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखाकार

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या

1	चेतना परिवार	पृ०
2	अनुक्रमणिका	सं०
3	महालेखाकार का संदेश	iii
4	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	iv
5	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश	v
6	सम्पादकीय	vi
7	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ (2014-15)	vii
8	पुरस्कार वितरण	viii
		ix
		xi

	लेखक का नाम	पदनाम	रचना का नाम	रचना के प्रकार	पृ० सं०
1	अमरेंद्र कुमार पाण्डेय	स०ले०अधि०	सबसे बड़ा विद्ववान	(व्यंग्य)	1
2	देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	तीन महत्वपूर्ण सीखें	(कहानी)	8
3	देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	माता-पिता की सेवा	(कहानी)	9
4	अजय कुमार बैठा	एम०टी०एस०	मेरी हवाई यात्रा	(कहानी)	10
5	देव प्रकाश केशरी	लेखाकार	इंटरनेट की लत	(लेख)	12
6	मो० आफताब अंसारी	व०लेखाकार	गजल		14
7	सत्येन्द्र माँझी	एम०टी०एस०	चिक्की और चाँद	(कहानी)	15
8	धीरज कुमार	एम०टी०एस०	ग्रामीण विकास में ई-कॉमर्स की भूमिका	(लेख)	16
9	धीरज कुमार	एम०टी०एस०	अस्पताल यात्रा	(कहानी)	17
10	प्रभास चन्द्र	व०लेखाकार	देश तरक्की कर रहा है	(व्यंग्य)	18
11	प्रतिमा कुमारी	व०लेखाकार	सखी	(कविता)	20
12	प्रतिमा कुमारी	व०लेखाकार	ऐसा हो	(कविता)	21
13	शिव शंकर तिवारी	व० लेखाकार	गजल		22
14	संजय ओझा	लेखाकार	महात्मा गांधी सेतु	(कविता)	23
15	संजय ओझा	लेखाकार	मैं मगन मगधर में	(कविता)	26
16	राजेश कुमार	डी० ई० ओ०	राह के रोड़े	(कविता)	32
17	बनवारी सिंह	लेखाकार	निरगुन	(लोकगीत)	33
18	मो० शादाब, पुत्र	व० लेखाकार	वन्दना	(कविता)	34
19	मो० आफताब अंसारी				
19	श्रीराम पाण्डेय	स०ले०अधि०	और मैं पानी-पानी हो गया	(कहानी)	35
20	नायला समरीन, पुत्री	स०ले०अधि०	प्रकृति का संदेश	(कविता)	36
21	मो० आफताब अंसारी				
21	ऋषव माँझी, पुत्र	एम०टी०एस०	खूब बड़े हो जाओगे	(कविता)	37
22	सत्येन्द्र माँझी				
22	अमृतांशु पुष्कर, पुत्र	स०ले०अधि०	पेट का त्योहार	(कविता)	38
23	प्रमनिवास मिश्र				
23	अश्विन अनुराग, पुत्र	स०ले०अधि०	यादों की फोल्डर से	(व्यंग्य)	39
	प्रेमनिवास मिश्र				



संदेश

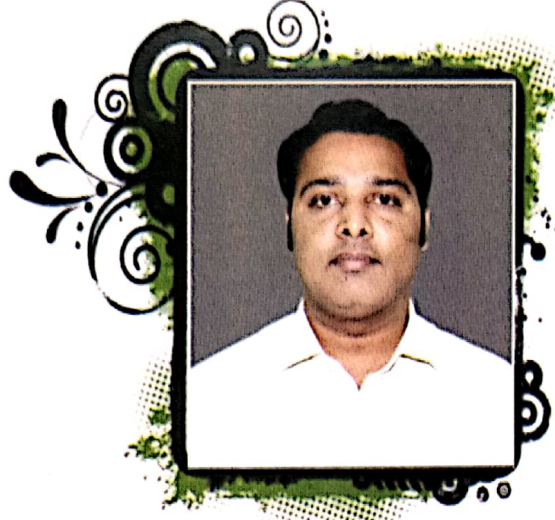
आज बहुत ही हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि हिन्दी पखवारा की इस शुभ वेला में हमारे कार्यालय ने लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में सम्पन्न कर मुख्यालय का मान बढ़ाया है तथा राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिन्दी में प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान किया है। गृह पत्रिका 'चेतना' भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस अंक में विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिन्दी के प्रति अपने समर्पण, प्रेम, आदर एवं सम्मान का परिचय कविताओं, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं उनकी इस भावना एवं सतत् प्रयास हेतु उन्हें साधुवाद देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि हिन्दी के उत्थान में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का सतत् प्रयास अक्षुण्ण बना रहे।

शुभकामनाओं सहित।

Sanjay Kumar

संजय कुमार
(महालेखाकार)



संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 26वें अंक, संयुक्तांक के रूप में कर्मचारियों एवं संपादक मंडल के सहयोग से आपके समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए हम सब का दायित्व है कि सरकारी काम-काज तथा व्यक्तिगत पत्र-लेखन में हम हिन्दी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें और अपरिहार्य परिस्थितियों में ही अंग्रेजी का प्रयोग करें।

हिन्दी भाव-सम्प्रेषण की सरल भाषा है। फलस्वरूप इसके माध्यम से पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता है और इसीलिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी को केन्द्रीय कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में हिन्दी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका सुखद परिणाम पूरे देश में परिलक्षित है।

कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को मैं अपनी तरफ से शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हिन्दी में कार्य कर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त किया एवं कार्यालय का सम्मान बढ़ाया है।

धन्यवाद।

जय हिन्द! जय हिन्दी!

शुभकामनाओं सहित।

मुकेश कुमार लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)



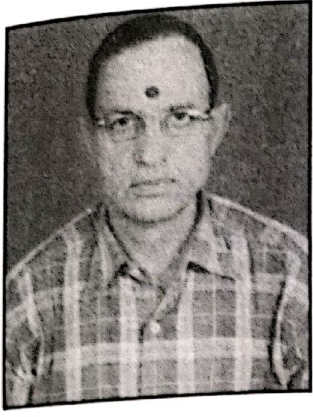
संदेश

हिन्दी, हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु पूरे देश को एक सूत्र में बाँधने का वह धागा व सुलभ साधन भी है, जो विभिन्न प्रान्तों को मोतियों की तरह आपस में पिरोकर एक सुन्दर माला बनाती है।

इस सन्दर्भ में निश्चित रूप से हमारी पत्रिका 'चेतना', गृह मंत्रालय (भारत सरकार) एवं मुख्यालय द्वारा जारी किए गये निर्देशों का पालन करते हुए लोगों में हिन्दी के प्रति जागृति प्रदान करती है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए पत्रिका के माध्यम से कार्यालय कर्मियों को हमारी शुभकामनायें।

धन्यवाद।

जॉर्ज सैमुअल,
उप महालेखाकार
(पेंशन व निधि)



सम्पादकीय

हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 26वें अंक को हिन्दी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। शासकीय कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति अभिरुचि सहित जागरूकता लाने एवं इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है। पत्रिका के प्रचार एवं विकास के लिए सतत प्रयत्न हो रहा है। तीव्र गति से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अतः विश्व की अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना आवश्यक है, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता। अतः हिन्दी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए प्रतिदिन हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप से डालनी पड़ेगी।

आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर यह संकल्प लेना होगा कि सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिन्दी में ही की जायेगी तथा साथ ही हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर की जायेगी।

इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध एवं कविता इत्यादि प्रत्येक माह नियमित रूप से हिन्दी कक्ष को देते रहेंगे, ताकि पत्रिका अपने त्रैमासिक लक्ष्य को प्राप्त कर सके और पाठकगण इससे लाभान्वित हो सकें।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार एवं सुझाव बेहिचक सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचना से इसे सुशोभित करने की कृपा करेंगे।

अंत में अपने हिन्दी-प्रेमी विद्वान, संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री संजय कुमार तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक-मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित हुई है। पत्रिका में सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय रही है। उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद! पत्रिका में त्रुटि नहीं हो, इसका पूरा प्रयास किया गया है तथापि यदि उसमें त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए क्षमा याचना है। इसके लिए विज्ञ पाठकगण मार्ग दर्शन करने का अनुग्रह करेंगे। अपनी ओर से सभी पाठकों और रचनाकारों को पुनः बधाई देता हूँ।

जय हिन्द, जय हिन्दी ।

श्री भारत भूषण झा
(संपादक)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी।

कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार,

पटना में हिन्दी गतिविधियाँ-2014-15

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नांकित है:-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन-

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 3023 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें हिन्दी में 3023 तथा अंग्रेजी में शून्य रहे।

2 हिन्दी पत्राचार :

वर्ष 2014-15 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,28,486 थी, जिनमें से 83,316 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गए कुल पत्रों की संख्या 83,316 थी। कुल भेजे गये पत्रों में से हिन्दी पत्रों की प्रतिशतता 100 थी।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति

वर्ष 2014-15 में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से सम्पन्न हुईं। नियमतः वर्ष के दौरान 4 बैठकें आयोजित की गईं; जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिन्दी कार्यशाला:

इस वर्ष इस कार्यालय में 7 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गईं, जिनमें कार्यालय के 50 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिन्दी पुरस्कार योजना:

वर्ष 2014 में हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत इस कार्यालय के कर्मियों एवं उनके बच्चों को हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया।

6 हिन्दी-पखवारा समारोह का आयोजन

इस कार्यालय में वर्ष 2014 के दौरान 01 सितम्बर, 2014 से 12 सितम्बर 2014 तक हिन्दी पखवारा समारोह का बृहत् आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-निबंध-प्रतियोगिता, प्रारूप-लेखन एवं संक्षेपण प्रतियोगिता, हिन्दी-अनुवाद प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयीं। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लेने हेतु जब भी आमंत्रित किया गया, इस कार्यालय ने भाग लेकर राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यालय ने राजभाषा में वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी।

8 हिन्दी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 107 अधिकारी एवं 444 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं। यहाँ 6 टंकक हैं जिनमें सभी हिन्दी में प्रशिक्षित हैं।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2014-15 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल रु 19,960/- व्यय किए गये, जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 10,000 रुपये व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है। वर्ष 2014-15 के दौरान इस कार्यालय में कुल 60759 फाइलें खोली गईं, जिनमें 60541 फाइलों में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गईं।

इस प्रकार इस कार्यालय द्वारा कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतर लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है। आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति की जा सकें।

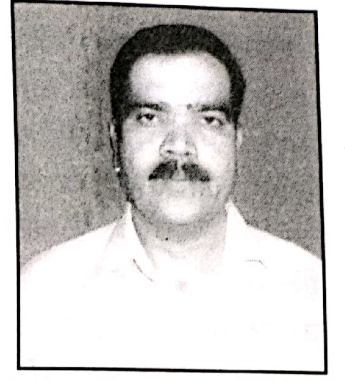
पुरस्कार वितरण (वर्ष-2014)

हिन्दी पखवारा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रम संख्या	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों का नाम
1	प्रारूप लेखन एवं संक्षेपण	प्रथम	श्री अविनाश कुमार ठाकुर (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		द्वितीय	श्री आशीष कुमार (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री देव प्रकाश केशरी (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
2	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	श्री अविनाश कुमार ठाकुर (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		द्वितीय	श्री अजय कुमार झा (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री नीरज कुमार-2, (स०ले०प०अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
3	बच्चों का काव्य पाठ	प्रथम	सुश्री प्राची श्री, पुत्री-श्रीमती नीतु कुमारी (स०ले०अधिकारी), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		द्वितीय	आर्येश, पुत्र-श्री दिलिप कुमार सिंह (व० लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	आस्था, पुत्री-श्री नीरज पाठक (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
4	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री संतोष कुमार (डी०ई०ओ०), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री देव प्रकाश केशरी (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री शंकर लाल सिंह (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)

5	स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	प्रथम	श्री राजू कुमार सिंह (स०ले०प०अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री आनन्द प्रकाश (लेखाकार), (ले० एवं ह० कार्यालय)
		तृतीय	श्री शंकरषन कुमार (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
6	हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	प्रथम	श्री नीरज कुमार-2, (स०ले०प०अधिकारी), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		द्वितीय	श्री अजय कुमार झा (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)
		तृतीय	श्री नवीन कुमार (लेखापरीक्षक), (लेखापरीक्षा कार्यालय)

सबसे बड़ा विद्वान



अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
स०ले०अ०

मैं लेख की शुरुआत पाठकों से एक प्रश्न से करना चाहता हूँ ।

“सबसे बड़ा विद्वान” वाक्यांश से आपके मन-मस्तिष्क में कैसा चित्र उभरता है ?
वैज्ञानिक, संत, शिक्षक, समाजसेवी, नौकरशाह अथवा अन्य किसी का !!

अब मैं आपको H.G.Wells के Time-Machine के माध्यम से आपके अतीत बाल्यावस्था में ले चलता हूँ । इस अवस्था में यदि इसी प्रश्न को दोहराया जाए तो अपना उत्तर क्या होगा ? क्या प्राप्त दोनों उत्तर समान हैं । समान होने चाहिए !!

शास्त्रों में मानव जीवन की चार अवस्थाएँ वर्णित हैं । ये हैं (क)ब्रह्मचर्य (Student life) (ख) गृहस्थ (ग) वानप्रस्थ एवं (घ) सन्यास (Wandering stage of life) प्रत्येक अवस्था को पुनः अनेक उपअवस्थाओं में विभाजित किया गया है । प्रत्येक अवस्थाओं /उपअवस्थाओं के लिए कर्म निर्धारित हैं । शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि इन निर्धारित कर्मों के सम्यक निर्वहन से ही प्राणी को मोक्ष (जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति) की प्राप्ति होती है । मोक्ष की प्राप्ति ही प्राणी का एकमात्र ध्येय होता है । यह सबों पर समान रूप से लागू होता है, और मोक्ष प्राप्ति का अन्य कोई विकल्प नहीं है । मनुष्य अपने जीवन की शुरुआत First stage of life ब्रह्मचर्य से करता है और कालान्तर में अन्य अवस्थाओं से गुजरते हुए wandering stage of life (सन्यास के साथ जीवन का अन्त करता है । आज यह कितना प्रासंगिक है, लोग इसका अनुसरण कर रहे हैं अथवा नहीं ? उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं यह विवाद का विषय हो सकता है, परन्तु यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि जब मनुष्य एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है तो उसके ज्ञान, अनुभव, तार्किक, ग्रह्यता आदि में वृद्धि होती जाती है । मनुष्य की सोच में इन तत्वों की बड़े ही प्रमुख रूप से भागीदारी होती है । उनकी सोच में इन तत्वों का ही योगदान रहता है । तो ऊपर के तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि wandering stage of life में मनुष्य की सोच सर्वोत्कृष्ट होनी चाहिए । यजुर्वेद में भी कहा गया है “धिया विप्रो अजायत” अर्थात् विचार श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त होने चाहिए । इस प्रकार व्यावहारिक एवं शास्त्रानुसार दोनों ही ईंगित करता है कि जीवन की उत्तरोत्तर (Later stage of life cycle) अवस्था की सोच उसके पूर्ववर्ती अवस्था की सोच से परिपक्व होते हैं ।

तो क्या बचपनावस्था के विचार जीवन की अन्य अवस्था के विचारों के मुकाबले कमतर महत्व के होते हैं ? कदापि नहीं, ऐसा नहीं है । मनुष्य के भावी व्यक्तित्व का स्वरूप, इसी

अवस्था में पाए संस्कारों से निर्मित होता है। इसी अवस्था में देखे स्वपन को शेष जीवन में यथार्थ में उतारा जाता है। जो विचार मस्तिष्क में Student life में उभरते हैं, शरीर उसका अनुसरण करता है। जीवन की यह अवस्था पवित्र एवं निश्छल होता है, षडयंत्र, धोखाधड़ी, झूठ, स्वार्थ, अवसरवादी आदि दुर्गुणों से दूर रहता है तो इस अवस्था के विचार कम महत्व के कैसे हो सकते हैं ? सबसे बड़ी बात इस अवस्था में जुड़ी घटनाओं को शेष तीन अवस्थाओं में स्मरण किया जा सकता है। शायद ही ऐसा कोई मनुष्य हो जिनकी बचपनावस्था की खट्टी-मिट्टी यादें उनसे जुड़ी न हो। अभिभावकों की नसीहत, शिक्षकों की डॉट, पड़ोसियों के साथ घटित घटनाएँ और न जाने क्या-क्या। अंग्रेज कवि Wordsworth की महान उक्ति “The child is father of the man” भी बचपनावस्था के महत्व को स्थापित करता है। मेरे ख्याल से कवि की यह उक्ति भारतीय परिवेश में सटीक नहीं बैठती। यहाँ पिता के मुकाबले पितामह को अधिक महत्व दिया जाता है। ज्ञान, अनुभव के मामले में भी पितामह, पिता के मुकाबले बीस बैठते हैं। इन तथ्यों का भान अगर उन्हें होता तो वे निश्चित रूप से कहते “The child is grand father of the man”

बात उन दिनों की है जब हम प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत थे। गुरुजी हम छात्रों का Brain mapping किया करते थे। इसके तहत वे प्रत्येक विद्यार्थी से पूछते कि अभी तुम्हारे मन में क्या विचार चल रहा है ? बड़ा ही विचित्र जवाब गुरुजी को मिलता। “कोई कहता अभी छुट्टी हो जाए और मैं खेलने चला जाऊँ” कोई कहता “फलाना हलवाई के दूकान की सभी मिठाई मुझे मुफ्त में मिल जाए” आदि हॉ! मोनू का जब उसके विचार के बारे में पूछा जाता तो एक ही जवाब देता “परीक्षाओं के प्रश्नपत्र मुझे परीक्षा के एक दिन पूर्व ही मिल जाए”। इसके बाद पाठ्य-पुस्तक, आस-पड़ोस से संबंधित चार-पाँच प्रश्न गुरुजी पूछते। थोड़ी देर की गणना के बाद घोषित करते अमुक विद्यार्थी वर्ग का सबसे होशियार विद्यार्थी है। पुरस्कार के रूप में एक पेन्सिल उसे दिया जाता। इसके बाद एक-एक के विचार पर गुरुजी चर्चा करते। वे बताते उल-जुलूल बातों को मस्तिष्क में स्थान नहीं देनी चाहिए, और जो बात तुम्हें अपने मन में लगे सही है उसे ही अंगीकार करनी चाहिए। विचारों की शुद्धता पर लम्बा-चौड़ा भाषण देते। हॉ! मोनू जो प्रश्नपत्र परीक्षा के पहले पाने का विचार रखता था को जमकर फटकार लगाते। मोनू था भी विचित्र प्रायः हरेक शिक्षक से प्रश्न करता—“जब परीक्षा में पाँच ही प्रश्न पूछे जाने हैं तो पूरी-पुस्तक का अध्ययन क्यों किया जाए ? परीक्षा के एक दिन पूर्व ही प्रश्नपत्र अगर दे दिया जाए तो श्रम एवं समय की बचत होगी।” प्रश्न सुनते ही शिक्षक आग बबूला हो जाते और मोनू को जमकर डॉट पड़ती।

गुरुजी के brain mapping से प्रभावित होकर हमलोगों (चार दोस्तों की मंडली जिसमें मोनू भी शामिल था)ने निश्चय किया कि क्यों न सबसे बड़े विद्वान को ढूँढा जाए। कौन है सबसे बड़ा विद्वान ? इसमें सबसे बड़ी बाधा थी कि बड़े-बुजुर्गों से किस तरह के प्रश्न पूछे जाएँ और उसका मूल्यांकन कैसे हो। कोई हमलोगों के प्रश्न का उत्तर क्यों देगा ? कितनों से प्रश्न पूछे जाएंगे ? लाख कोशिश के बावजूद इन प्रश्नों का समुचित समाधान नहीं निकला। यह निश्चित किया गया कि हम चारों सर्वसम्मति के आधार पर सबसे बड़े विद्वान का चयन करेंगे। इसमें कल्पित अथवा ऐसे व्यक्ति पर विचार नहीं करने का निर्णय हुआ जिनसे हमलोग मिले न हो। हरेक दिन घंटों इस विषय पर विचार होता। रिवशेवाले से लेकर पड़ोस के वैज्ञानिक महोदय पर भी विचार किया गया लेकिन सबसे बड़े विद्वान के लिए कोई सटीक बैठ नहीं पा रहा था। हममें से कोई एक किसी के एक गुण का उल्लेख करते तो शेष तीन उनके दस अवगुण गिना

देते। सप्ताहभर की माथापच्ची के बाद हमलोगों ने ढूँढ निकाला सबसे बड़े विद्वान को। वे थे:-शीत चाचा शीत चाचा दुनियाँ की नजर में ताड़ी का व्यवसाय करनेवाले एक अतिसाधारण व्यक्ति भले ही हों, हमलोगों की नजर में वे ज्ञान का अकूत भण्डार थे। हमलोगों की दिनचर्या की शुरुआत उनसे प्रश्नोत्तरी के साथ होती थी। जब वे ऊँचे ताड़ के पेड़ पर चढ़ते तो इतनी ऊँचाई से वे दुनियाँ की सब चीज़ साफ-साफ देख सकते हैं ऐसी हमलोगों की मान्यता थी। वे ऊँचे पेड़ पर चढ़ जाते तो चिल्लाकर हमलोग प्रश्न पूछते। नीचे आकर वे बड़े आत्मीयता एवं रोचक ढंग से प्रश्नों का उत्तर देते। हमलोग उनसे पूछते :-अमेरिका के राष्ट्रपति अभी क्या कर रहे हैं ? बम्बई के समुद्र के मछलियों का क्या हाल है ? आदि। नीचे आकर बताते अमेरिका के राष्ट्रपति का पद बड़ी जिम्मेदारी का है भाई। उन्हें बहुत सावधानी और शांति से काम करना पड़ता है, इसलिए जब पूरी दुनियाँ सो जाती है तो रात्रि की शांति में वे अपना काम निपटाते हैं। इसलिए अभी सो रहे हैं। बम्बई के समुद्र की मछलियों के बारे में बताते-मछलियाँ बड़े पेड़ की आकार की होती हैं। अभी-अभी एक बड़ी मछली ने चोर-डाकुओं से भरी एक नाव को डूबो दिया है। चोर-डाकुओं द्वारा गलत काम न करने की कसम खाने के बाद बड़ी मछली ने उनलोगों को पीठ पर लादकर समुद्र किनारे पहुँचाया है। वाह रे समुद्र की मछली.....। इस तरह की कितनी ही रोचक घटनाएँ चाचा प्रतिदिन हमलोगों को बताते। हमलोगों की जिज्ञासा और बढ़ती जाती और अगले दिन सुबह फिर पहुँच जाते अनेक प्रश्न लेकर।

एक दिन गुरुजी ने कक्षा में बताया कि पृथ्वी अपनी ओर एक ताकत से सभी वस्तुओं की खींचती है। अन्तरिक्ष (ऊँचाई पर)अनेक ऐसे पिण्ड हैं जो अपनी ओर वस्तुओं को खींचती है। ये पिण्ड यत्र-तत्र घूमते रहते हैं। पाठ समझ में आई अथवा नहीं लेकिन एक बात समझ में आई वह यह कि चाचा भी काफी ऊँचे चढ़ते हैं अगर कोई पिण्ड घूमते-घूमते उनके नजदीक आए और उन्हें खींच ले जाए तो। चाचा को ये बात बतानी होगी ताकि वे सावधान रहें। अगले दिन पेड़ पर चढ़ने के पूर्व हमने सारी वृत्तान्त कह डाली। चाचा ने बड़े बेफिक्री से कहा मैं ये बात जानता हूँ तभी तो कमर के रस्सी को पेड़ से बांधे रहता हूँ। हमलोग निश्चिंत हुए। आखिर चाचा हैं सबसे बड़े विद्वान, उनसे कोई बात कैसे छुपी रह सकती है ?हमलोगों का चयन निःसंदेह सही है। उस दिन चाचा से पूछा गया कि बताइए तो हमारे गुरुजी क्या कर रहे हैं। चाचा को क्या शरारत सूझी ? बताया घोड़े बेचकर सो रहे हैं। अरे! गुरुजी हमलोग को उपदेश देते हैं जल्दी उठा करो और स्वयं। कक्षा में पहुँचते ही गुरुजी से पूछा गया आप खुद देर तक सोते हैं.....। उन्हें यह भी बताया गया ये बातें शीत चाचा ने बताई हैं। उनकी नजरों से कुछ भी छुपा हुआ नहीं है आखिर वे हैं सबसे बड़े विद्वान। गुरुजी की मुखाकृति गंभीर हो गई थी। अगले दिन चाचा के साथ प्रश्नोत्तर का दौर चल ही रहा था कि गुरुजी आ धमके। आते ही चाचा पर शब्दों के बाण की बौछार कर दी। शर्म नहीं आती, मूर्ख कहीं के, बच्चों को बहकाते हो। उल-जूलूल बातें सिखाते हो। गुरुजी का चेहरा गुस्से से लाल था। खबरदार जो आज के बाद बच्चों के साथ देखा। गुरुजी के हाथों सबसे बड़े विद्वान का अपमान देखकर हमलोगों को भारी ग्लानि हुई। गुरुजी का मन इतने से नहीं भरा। वे हम चारों के घर गए। घर के अभिभावक को भी डाँट पिलाई। आपका बेटा कैसे लोगों की संगति में रह रहा है ? कुछ पता है, जब अपने बेटे पर नजर नहीं रख पा रहे हैं, तो खाक सरकार की सेवा करेंगे ? गुरुजी की महत्ता का एहसास पहली बार हम सबों को हुआ। अब हमारी गतिविधि पर कड़ी नजर रखी जाने लगी कई-कई दिनों तक स्कूल के अतिरिक्त हमलोग आपस में मिल नहीं पाए। शीत चाचा

को मुहल्ले में आने, पेड़ की चढ़ाई से मनाही कर दी गई। लेकिन हमलोगों के मन में चाचा के प्रति सम्मान में कोई कमी नहीं आई।

उन दिनों सरकारी विद्यालयों में दो ही परीक्षाएँ होती थी। दिसम्बर की परीक्षा के बाद हमलोग प्रतिष्ठित पटना हाई स्कूल में नामांकित हुए। विद्यालय दो पालियों Morning class (v to vii) एवं day class (viii to xi) में चलता था। विद्यालय का दो मंजिला भव्य 'E' आकार का building जो Education का पर्याय है। लगभग 125 विद्वान शिक्षक, सुसज्जित वर्ग जिसमें Microphone, Speaker द्विस्तरीय विशाल Black-board एवं आकर्षक बड़ा परिसर। अनुशासन की तो बात ही मत पूछिए। कहा जाता है कि जब स्कूल में वर्ग चल रहा हो तो पिन गिरने से भी शांति भंग होती थी। कहा जाता है कि अंग्रेजों ने अपने बच्चों की शिक्षा के लिए इस विद्यालय की स्थापना की थी। नए माहौल में हम सभी उत्साहित थे। रोज नए-नए शिक्षकों के सम्पर्क में आते और उनके पढ़ाने की शैली से हमलोग आश्चर्यचकित थे। कहाँ प्राथमिक विद्यालय के गुरुजी और अब ये विद्वान शिक्षक.....।

सबसे मजेदार रहा गणित शिक्षक के साथ परिचय।

शिक्षक महोदय ने वर्ग में प्रवेश के साथ ही Black-board पर एक प्रश्न जड़ दिया “एक बन्दर एक मिनट में खंभे पर तीन फीट उपर चढ़ता है। अगले मिनट में अपने चढ़े हिस्से का एक तिहाई लुढ़क जाता है यदि खंभे की लम्बाई 33 फीट हो तो कितने समय में वह खंभे पर चढ़ पाएगा।” उत्तर दशमलव के चार अंको तक हो, ऐसा शिक्षक महोदय का निर्देश था। Copy Blank नहीं रहनी चाहिए, और सभी इसे Solve करने का प्रयास करें।

पूरा वर्ग प्रश्न का हल करने में मग्न हो गया। शिक्षक महोदय के कड़क आवाज़ पूरे वर्ग में सुनाई दिया। Bench No-3 Student No-2 क्या चल रहा है? Sir Solve हो गया, सबों की निगाहें उस Student पर जा टिकी। इतनी जल्दी। अरे ये तो मौन है जरूर कोई बखेड़ा खड़ा करेगा। गुरुजी के पूछने पर मोनू ने उत्तर बताया 11 मिनट बशर्ते कि बन्दर लुढ़के नहीं। वर्ग में हँसी का फव्वारा फूट पड़ा शिक्षक महोदय का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। Idiot मैंने तुम्हें प्रश्न सुधारने नहीं इसे हल करने को कहा है। कापी लाओ दिखाओ.....कापी पर नज़र पड़ते ही उनका गुस्सा काफ़ूर हो गया। उन्होंने कापी विद्यार्थियों की ओर लहराकर दिखाई। कापी में एक मजबूत खंभा एवं तीन विभिन्न स्थितियों में बंदर का सजीव चित्र बना हुआ था। खंभे के चित्र को ऐसा बनाया गया था कि बन्दर सिर्फ ऊपर चढ़ सकता है चाहकर भी लुढ़क नहीं सकता है। खंभे के ऊपर बन्दर का जो चित्र बना था वह विजयी मुद्रा में दोनों हाथ मुस्कुराहट के साथ हिला रहा था। निश्चित रूप से चित्र आकर्षक था। शिक्षक महोदय ने मोनू की प्रशंसा भी की इस सुन्दर चित्र के लिए लेकिन साथ में चेतावनी भी दे डाली भविष्य में प्रश्नों के साथ छेड़-छाड़ न हो। प्रशंसा से मोनू की हिम्मत बढ़ी। उठकर पूछा सर एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। हाँ पूछो, शिक्षक महोदय ने कहा। हमलोगों का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। जरूर यह परीक्षा के पहले प्रश्न क्यों नहीं दे दिया जाता है, वाला प्रश्न पूछेगा और डॉट खाएगा। कितना समझाया था उसे कम से कम नए विद्यालय में उसे ऐसे प्रश्नों से बचना चाहिए था। मोनू ने पूरे आत्मविश्वास और निश्चित भाव से प्रश्न किया।

जब परीक्षा में मात्र पाँच ही प्रश्न पूछे..... तो पूरी पुस्तक का अध्ययन क्यों जरूरी है। यदि परीक्षा के एक दिन पहले.....तो श्रम एवं समय की बचत होती।

आश्चर्य ! शिक्षक महोदय के चेहरे पर गुस्से की जगह मुस्कुराहट थी। उन्होंने पहले बंदर से चढ़ने/लुढ़कने के Sum को सरल तरीके से हल करना बताया। मोनू के प्रश्न के उत्तर की शुरुआत उन्होंने जिन शब्दों से की थी वह आज भी मुझे अक्षरशः याद है।

विद्यार्थियों!!!!

परीक्षा दो शब्दों के मेल (पर+इच्छा)से बना है। परीक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है-दूसरे की इच्छा। यह परीक्षा लेने वाला पर निर्भर करता है कि वह कितने, एवं किस तरह का प्रश्न पूछे। स्वस्थ परम्परा तो यह है कि अधिक से अधिक प्रश्न पूछे जाएँ तकि परीक्षार्थी के ज्ञान की परख, जो परीक्षा का मूल उद्देश्य होता है। विज्ञानियों ने एक ऐसी विधि विकसित की है जिसके उपयोग से हम न्यूनतम प्रयास से वही परिणाम प्राप्त कर सकते हैं जो एक एक के परीक्षण से प्राप्त होते हैं। इसे Sampling कहा जाता है, जिसका अध्ययन आप आगे की कक्षाओं।

लगभग तीस मिनट के व्याख्यान में शिक्षक महोदय ने उन सभी शंकाओं/क्लिष्टताओं को दूर/सरल किया जो उनसे पूछा गया। पूरा वर्ग उनके इस ज्ञानमयी अभिभाषण से अभिभूत था। शिक्षक महोदय के बारे में और जानने की इच्छा हुई पता चला वे कई पुस्तकों के रचयिता, भारत सरकार शोध संस्थान के सक्रिय सदस्य एवं राजधानी के एक अति प्रतिष्ठित शिक्षक हैं। हमलोगों की नज़रों में सबसे बड़े विद्वान के योग्यतम उम्मीदवार यही शिक्षक महोदय नज़र आने लगे। एक दिन हम सबों ने सर्वसम्मति से शीत चाचा के रिक्त पदवी पर इन्हें प्रतिस्थापित कर दिया। ये सही मायने में सबसे बड़े विद्वान हैं, किसकी मजाल जो शीत चाचा वाली हरकत इनके साथ करे। ज्यों-ज्यों हमलोगों के ज्ञान एवं समझ का दायरा बढ़ता गया त्यों-त्यों हमलोगों की आस्था उनके प्रति गहरी होती चली गई। कभी-कभार हमलोगों के मन में ऐसा विचार अवश्य उठता कि “क्या है कोई ऐसा जो इस शिक्षक महोदय से अधिक विद्वान हो”। दूर-दूर तक इसकी कोई संभावना नज़र नहीं आती!! हाँ जब कभी ये हमें दण्ड देते तो प्रतिक्रिया स्वरूप दबी जुबान से चर्चा अवश्य होती। किताब लिखना कोई बड़ी बात नहीं, चार पाँच पुस्तकें लो सबों से कुछ पृष्ठ कॉपी करो, पुस्तक तैयार। कुछ विद्यार्थी कहते रोज-रोज Sum बनाते इन्हें सब रटा गया है, नयापन कुछ नहीं है।

उन्हीं दिनों की बात है, हमारे पड़ोस के सरकारी क्वार्टर में एक नए परिवार का आगमन हुआ। परिवार के मुखिया सचिवालय में बड़े-बाबू हैं। बड़ा सा पेट घुंधराले बाल, आँखों पर मोटी चश्मा कुल मिलाकर आकर्षक व्यक्तित्व।

उनके आवास पर सुबह से ही लोगों की आवाजाही शुरू हो जाती थी। आने वाले लोगों में अधिकतर वे होते जिन्हें किसी मसले पर बड़े-बाबू की राय लेनी होती। चूँकि वे हौम्योपैथ डाक्टर भी थे अतः मरीजों की संख्या इन आने वाले में अच्छी खासी होती। किसी को मकान बनाना हो, बेटी का ब्याह करना हो अन्य कोई सरकारी काम हो लोग बड़े-बाबू की राय अवश्य लेते। विभिन्न क्षेत्रों का बड़ा ही विस्तृत ज्ञान था उन्हें। उनके यहाँ आने वाले लोगों की संख्या, उनका रहन सहन डील-डौल बड़ा प्रभावित किया हमलोगों को। हम चारों में से एक ने उपर्युक्त तर्क देते हुए इन्हें ही सबसे बड़ा विद्वान मानने का सुझाव दे दिया। लोगों की भीड़ जुटा लेना ज्ञान का मापदण्ड नहीं। शिक्षक महोदय का विकल्प ये कदापि नहीं हो सकते।

क्यों नहीं हो सकते.....तुमलोगों को पता है वे फाइलों पर लिखते हैं, जोर डालकर उस मित्र ने कहा। अरे ये फाइल क्या बला है? उन्होंने बताया फाइल पर लिखने से ही बड़े-बड़े पुल, महल बनते हैं। यहाँ तक कि बड़े-बड़े जहाज, रेल, कारखाने आदि फाइलों पर लिखने से

ही बनते हैं। अगर कोई जज फाइल पर लिख दे कि फलों को जेल में बंद कर दो तो उसे जेल में बन्द कर दिया जाएगा। फाइलों पर लिखना कोई हंसी-मजाक नहीं। फाइल वाले सिंघांत ने हम तीनों को प्रभावित तो किया लेकिन इतना नहीं कि उस विद्वान शिक्षक की पदवी इस फाइल वाले बड़े बाबू को दे दी जाए। रोज 'सबसे बड़े विद्वान' पदवी को बदलने को लेकर घंटे तर्क-वितर्क होता, लेकिन हम तीनों ने भी टस से मस नहीं होने का निर्णय ले लिया था।

एक दिन बड़ा विचित्र हुआ। गणित के विद्वान शिक्षक महोदय बड़े-बाबू से मिलने आए, चूंकि बड़े-बाबू के घर पर लोगों का जमावड़ा लगा हुआ था, भीड़ छंटने की प्रत्याशा में वे मेरे घर तशरीफ ले आए। उनका यथोचित सत्कार किया गया। शिक्षक महोदय ने हमारे अभिभावक से कहा उनका स्थानान्तरण हो गया है, परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि पटना अभी छोड़ा नहीं जा सकता। स्थानान्तरण का मामला बड़े-बाबू ही देख रहे हैं, अगर फाइल पर उन्होंने मेरे पक्ष में लिख दिया, तो काम बन जाएगा। भीड़ कम होने पर एकांत में बड़े-बाबू से इस कार्यवश मिलना है। इस घटना की जानकारी जब उन मित्र को हुई जो बड़े-बाबू को 'सबसे बड़ा विद्वान' पदवी देने का हिमायती था तो उन्होंने कहा समझ में आया फाइल क्या है? किसकी लेखनी में ज्यादा दम है बड़े बाबू अथवा विद्वान शिक्षक। उन्होंने धमकी भरे अंदाज़ में कहा यदि तुम तीनों बड़े-बाबू को सबसे बड़े विद्वान नहीं मानोगे तो फाइल पर बड़े-बाबू से लिखवा दिया जाएगा और कभी आगे की कक्षा में जा नहीं पाओगे। बड़े बाबू ने कुछ उल्टा-सीधा लिख दिया तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

फाइल के प्रभाव एवं आतंक, मित्र की धमकी अनमने मन से हम तीनों ने भी बड़े-बाबू को 'सबसे बड़ा विद्वान' पदवी से अलंकृत कर दिया। अब शीत चाचा एवं गणित के शिक्षक महोदय विद्वानों के श्रेणी में से ये बड़े-बाबू सबसे बड़ा विद्वान।

आस-पड़ोस में थोड़े ही दिनों में बड़े-बाबू की ख्याति फैल गई। लोगों के बीच उनके समक्ष अपनी उपस्थिति दर्ज करने की होड़ लगी रहती थी।

एक दिन बड़े-बाबू के घर में हुई बैठक में निर्णय हुआ कि पाँच-छह परिवार तीर्थ-यात्रा/भ्रमण पर उनके परिवार मुखिया के साथ जाएंगे। उन्होंने ही अन्य परिवार मुखिया को किसी सरकारी स्कीम की जानकारी दी थी, जिसके तहत भ्रमण में आने वाले खर्च का वहन सरकार को करना था। सबों ने यात्रा की सहमति स्कीम के लाभ की प्रत्याशा में ही दी थी। वैसे भी इनके प्रस्ताव का विरोध करने वाला कोई तो था नहीं!!!

नियत तिथि को यात्रा की शुरुआत हुई। सब मिलाकर कुल 20 व्यक्ति इस दल में थे। इस यात्रादल के मार्गदर्शक सूत्रधार एवं संरक्षक बड़े-बाबू ही थे। संयोग से हम चारों इस यात्रा दल में थे। किस ट्रेन से कहाँ तक जाना है, कहाँ बस पकड़नी है, किस जगह पर कितना समय व्यतीत करना है, की व्यवस्था बड़े-बाबू ने इतना सुंदर ढंग से किया था कि यात्रा दल के सभी सदस्य उनके इस हुनर के कायल हो गए थे। पर्यटक स्थल पर वहाँ के बारे में उनके द्वारा जो जानकारी दी जाती थी, वह साधारण आदमी के बस की बात नहीं। हम बच्चों का वे विशेष ख्याल रखते। उनसे हमारी निकटता जब बढ़ी तो महसूस किया कि सबसे बड़ा विद्वान की पदवी इन्हें देकर हमलोगों ने कोई गलत काम नहीं किया है। यात्रा का अंतिम पड़ाव वाराणसी था। वहाँ से मुगलसराय आने का पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम था, जहाँ से रेलगाड़ी में सीट पटना के लिए आरक्षित था। वाराणसी से मुगलसराय आने के क्रम में बस रास्ते में ऐसे लटकी कि हमलोग लगभग 1 घंटे की देरी से मुगलसराय पहुँचे। यात्रा के लिए पूर्व-निर्धारित ट्रेन

मुगलसराय से प्रस्थान कर चुकी थी। चिन्ता की लकीरें बड़े-बाबू के चेहरे पर उभर आई थी। बेचैनी में कभी ट्रेन की लिस्ट की पटल देखते कभी अपनी घड़ी की ओर देखते। इस समस्या पर वे लोग आपस में सलाह-मशविरा करते। अन्त में बड़े-बाबू ने कहा Enquiry में पूछते हैं पटना के लिए कोई ट्रेन है भी या नहीं। हमलोग भी उनके पीछे-पीछे उस स्थान तक गए। निर्धारित स्थान पर जाकर बड़े बाबू ने पूछा पटना के लिए क्या कोई ट्रेन है। जवाब मिला 10 बजे प्लेटफार्म न0 फलों पर ट्रेन आएगी।

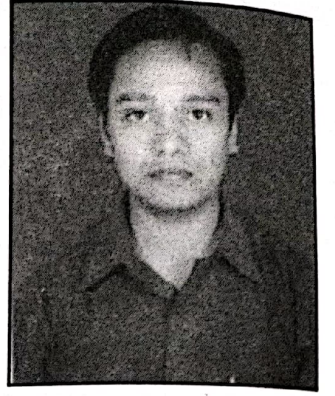
अरे! बड़े-बाबू से भी विद्वान है कोई। कौन सी ट्रेन ,कहाँ आएगी सब जानता है ये। ये तो ज्ञान का खान है जो मर्जी आए पूछो सब बताएगा। सही मायने में रेलवे का यह कर्मचारी ही सबसे बड़ा विद्वान है।

हम लोगों की पूर्ण-पीठ द्वारा सर्वसम्मति से चुना गया कर्मचारी ही अन्तिम सबसे बड़ा विद्वान है जो हमलोगों के मन-मस्तिष्क पर आज भी अंकित है। आजकल इन्टरनेट, एस.एम.एस. एवं स्टेशनों पर की गई Announcement की व्यवस्था ने इस सबसे बड़े विद्वान के कार्यक्षेत्र में सेंधमारी की है, लेकिन यात्रा की निश्चितता इससे व्यक्तिगत रूप से मिलकर करने में है, वह अन्य माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं में नहीं है। मैं जब भी ट्रेन का उपयोग करता हूँ, enquiry से सम्पर्क कर सबसे बड़े विद्वान के मुख से जानकारी अवश्य लेता हूँ।

मेरा आपसे आग्रह है यात्रा के पूर्व इनसे अवश्य जानकारी हासिल कर लें, इससे उनका सम्मान बढ़ेगा और आपकी यात्रा निश्चितता से होगी।

+++++

तीन महत्त्वपूर्ण सीखें



देव प्रकाश केशरी
लेखाकार

बहुत समय पहले की बात है। दक्षिण भारत में एक प्रतापी राजा रहता था। राजा के तीन पुत्र थे। एक दिन राजा के मन में आया कि पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाये कि समय आने पर वो राज-काज सम्भाल सकें। इस विचार के साथ राजा ने सभी पुत्रों को दरबार में बुलाया और बोला-हमारे राज्य में नाशपाती का कोई वृक्ष नहीं है। मैं चाहता हूँ तुम सब चार-चार महीने के अंतराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वो कैसा होता है? राजा की आज्ञा पा कर तीनों पुत्र बारी-बारी से गए और वापस लौट आये।

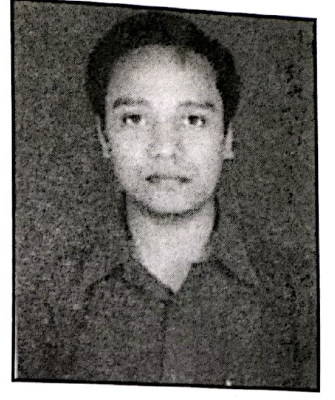
सभी पुत्रों के लौट आने पर राजा ने पुनः सभी को दरबार में बुलाया और उस पेड़ के बारे में बताने को कहा।

पहला पुत्र बोला-पिताजी वह पेड़ तो बिलकुल टेढ़ा-मेढ़ा, और सूखा हुआ था। नहीं-नहीं वो तो बिलकुल हरा-भरा था, लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी क्योंकि उसपर एक भी फल नहीं लगा था, दुसरे पुत्र ने पहले को बीच में ही रोकते हुए कहा। फिर तीसरा पुत्र बोला-भैया! लगता है आप भी कोई गलत पेड़ देख आये क्योंकि मैंने सचमुच नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फलों से लदा पड़ा था।

और तीनों पुत्र अपनी-अपनी बात को लेकर आपस में विवाद करने लगे। तभी राजा अपने सिंहासन से उठे और बोल-पुत्रों, तुम्हें आपस में बहस करने की कोई आवश्यकता नहीं है। दरअसल तुम तीनों ही वृक्ष का सही वर्णन कर रहे हो। मैंने जानबूझ कर तुम्हें अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और तुमने जो देखा वो मौसम के अनुसार था।

मैं चाहता हूँ कि इस अनुभव के आधार पर तुम तीन बातों की गाँठ बाँध लो। पहली, किसी चीज के बारे में सही और पूर्ण जानकारी चाहिए तो तुम्हें उसे लम्बे समय देखना-परखना चाहिए, फिर चाहे वो कोई विषय हो, वस्तु हो, या फिर कोई व्यक्ति ही क्यों न हो। दूसरी, हर मौसम एक-सा नहीं होता। जिस प्रकार वृक्ष मौसम के अनुसार सूखता, हरा-भरा या फलों से लदा रहता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हो तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाये रखो, समय अवश्य बदलता है। तीसरी बात अपनी बात को ही सही मान कर उस पर अड़े मत रहो, अपना दिमाग खोलो, और दूसरे के विचारों को भी जानो। यह संसार ज्ञान से भरा पड़ा है, चाह कर भी तुम अकेले सारा ज्ञान अर्जित नहीं कर सकते, इसलिए भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से सलाह लेने में संकोच मत करो''

माता-पिता की सेवा



देव प्रकाश केशरी
लेखाकार

एक बार की बात है एक बगीचा में आम का एक बड़ा पेड़ था। एक बच्चा रोज उस पेड़ पर खेलने आया करता था। वह कभी पेड़ की डाली से लटकता, कभी फल तोड़ता और कभी उछल कूद करता था। आम का पेड़ भी बच्चे से काफी खुश रहता था। कई साल इस तरह बीत गये। अचानक एक दिन बच्चा कहीं चला गया फिर लौट के नहीं आया। पेड़ ने उसका काफी इंतज़ार किया पर वह नहीं आया। अब तो पेड़ उदास हो गया।

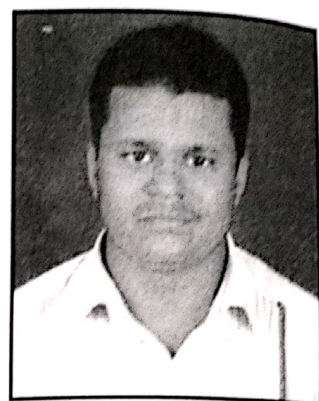
काफी साल बाद वह बच्चा फिर से पेड़ के पास आया पर वह अब कुछ बड़ा हो गया था। पेड़ उसे देखकर काफी खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा। पर बच्चा उदास होते हुए बोला कि अब वह बड़ा हो गया है। अब वह उसके साथ नहीं खेल सकता। बच्चा बोला कि अब मुझे खिलौने से खेलना अच्छा लगता है पर मेरे पास खिलौने खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। पेड़ बोला उदास ना हो तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बेच कर खिलौने खरीद लो। बच्चा खुशी खुशी फल तोड़ कर ले गया लेकिन वह फिर बहुत दिनों तक वापस नहीं आया। पेड़ बहुत दुखी हुआ।

अचानक बहुत दिनों बाद बच्चा जो अब जवान हो गया था वापस आया। पेड़ बहुत खुश हुआ और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहा पर लड़के ने कहा कि वह पेड़ के साथ नहीं खेल सकता। अब मुझे कुछ पैसे चाहिए क्योंकि मुझे अपने बच्चों के लिए घर बनाना है। पेड़ बोला मेरी शाखाएँ बहुत मजबूत हैं तुम इन्हें काट कर ले जाओ और अपना घर बना लो। अब लड़के ने खुशी खुशी सारी शाखाएँ काट डालीं और लेकर चला गया। वह फिर कभी वापस नहीं आया।

बहुत दिनों बाद जब वह वापस आया तो बूढ़ा हो चुका था। पेड़ बोला मेरे साथ खेलो पर वह बोला कि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ अब नहीं खेल सकता। पेड़ उदास होते हुए बोला कि अब मेरे पास ना फल हैं और ना ही लकड़ी अब मैं तुम्हारी मदद भी नहीं कर सकता। बूढ़ा बोला कि अब उसे कोई सहायता नहीं चाहिए। बस एक जगह चाहिए जहाँ वह बाकी जिंदगी आराम से गुज़ार सके। पेड़ ने उसे अपनी जड़ में पनाह दी और बूढ़ा हमेशा वहीं रहने लगा।

मित्रों इसी पेड़ की तरह हमारे माता पिता भी होते हैं, जब हम छोटे होते हैं तो उनके साथ खेलकर बड़े होते हैं और बड़े होकर उन्हें छोड़ कर चले जाते हैं और तभी वापस आते हैं जब हमें कोई ज़रूरत होती है। धीरे-धीरे ऐसे जीवन बीत जाता है। हमें पेड़ रुपी माता-पिता की सेवा करनी चाहिए नाकि सिर्फ़ उनसे फ़ायदा लेना चाहिए।

मेरी हवाई यात्रा



अजय कुमार बैठा
एम0टी0एस0

मेरे एक सहकर्मी सज्जन जो मेरे शुभ-चिन्तक भी हैं और इस रचना के सूत्राधार भी, एक बार मुझे उदास देखकर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या बात है बैठा जी, कोई परेशानी! मैंने मायूसी से कहा, क्या कहें सर! मेरा एक भाई है जो विदेश में रहता है। अब वह अथाह पैसा कमा कर बहुत बड़ा आदमी बन गया है और हम कहाँ रह गये इस दौड़ में। बचपन से मेरे मन में भी कुछ बनने का शौक था, पर बन नहीं पाया। मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उन्होंने तपाक् से कहा, अरे! कुछ बनने की चिन्ता क्यों करते हो, आपके कैडर के लोग धड़ल्ले से एकाउंटेंट बन ही रहे हैं, आप भी बन जाओ। काम आए या नहीं पर नाम तो होगा ही। वैसे भी इस कार्यालय के इतिहास में लोग सम्मानित पद से ही सेवा निवृत्त होते हैं। एम0टी0एस0 बनकर तो रिटायर होना नहीं आपको, कुछ ढंग के पद से ही रिटायर होंगे बैठा जी। भले अपना काम दूसरों की मदद से ही क्यों न करना पड़े। मैंने सोचा कि मजाक में भी शायद ठीक ही कह रहे हैं। पर सब एकाउंटेंट को काम आता हो जरूरी नहीं। एकाउंटेंट बनना होगा तो बनेंगे ही। आदमी का भाग्य कब बदल जाए, किसी को क्या मालूम?

मैं ससुराल में था, अपनी सरहज से कुछ बात करने में मशगूल। वह बता रही थी कि जब से ये दुबई गए हैं घर में पैसे की कोई कमी नहीं है। पर दुख यह है कि इनको देखे लगभग दो साल हो गया। साथ चलने के लिए बोलते हैं तो बोलते हैं कि समय आएगा तो तुमको दुबई ले चलूँगा। तभी मेरे चहेते छोटे साले का फोन आया। उनकी श्रीमति जी उनसे बात करते हुए उनको बतायी कि मेहमान आए हुए हैं। लीजीए, बात कर लीजिए उनसे। यह कह कर उन्होंने मोबाइल मुझे पकड़ा दिया। साले साहब ने मुझसे, उनसे कुछ बात करने के बाद कहा कि मेहमान आपको एक कष्ट दे रहे हैं। बात यह है कि मुझको आने की छुट्टी नहीं मिल रही है और कनिया को यहाँ आने का बहुत मन है। इसलिए उनको एक महीने में टाइम निकाल कर यहां पहुँचा दीजिए। आपको एक पैसा भी खर्च नहीं करना है इसमें।

मेरे मन में लड़खू फूट रहा था। मैं भागा-भागा पटना आया। यहां आकर दुबई की यात्रा से संबंधित जरूरी चीजों के बारे में लोगों से जानकारी लिया। आवश्यकतानुसार, एन0ओ0सी0 के लिए मैंने एक आवेदन अपने अनुभाग में दिया। उसके डीलिंग मैन् फाइल पुटअप करने में देर कर रहे थे। मैं इसमें देरी के कारण उनसे झल्ला कर एन0ओ0सी0 के लिए जल्दी करने को कहा, तो वे बोले कि अरे बैठा जी! सोच लीजीए। वहाँ जाकर आप बात कैसे कर पाइएगा, अंग्रेजी तो आप जानते नहीं। हमने कहा कि, सर! मेरा दिन ही खराब है आज। एक तो अभी तक मैंने लेंच भी नहीं किया है और उपर से आप इन्टीपोर कर रहे हैं। हर दोपहर में मेरे मुँह से लेंच सुनने को संबंधित लेखाकार महोदय अभ्यस्त हैं पर इन्टीपोर का मतलब मेरे लेखाकार महोदय को समझ में नहीं आया और उन्होंने मुझको देखते हुए पूछा-इन्टीपोर, यह कौन सा शब्द है? जहाँ हमको समझ में नहीं आता कि किस शब्द का प्रयोग किया जाए वहाँ हम

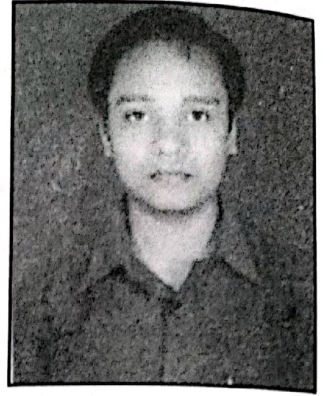
इन्टीपोर शब्द का ही प्रयोग करते हैं। मैंने उनको अपने अंग्रेजी के ज्ञान का लोहा मनवाते हुए कहा, क्या भैया, इन्टीपोर का क्लीयर मिनिंग है—अथी। अब अथी का मतलब मत पूछिएगा कथी। यह कहते हुए मैं कार्यालय आदेश बगल में दबाये बांटने के लिए सरर से अनुभाग से ऐसे निकल गया, जैसे बैताल विक्रम को छोड़ वापस पेड़ पर जा लटका हो।

रात में मैंने एक सपना देखा। मेरा वहाँ जाने के लिए पासपोर्ट वीजा बन गया। मुझे इतनी खुशी पहले जिंदगी में कभी नहीं हुई थी। हवाई जहाज पर चढ़ कर विदेश यात्रा करना मेरे लिए एक बहुत बड़ी बात थी। मैं सरहज के साथ कलकत्ता एअरपोर्ट पर पहुँचा और फिर दोनों अन्ततः हवाई जहाज में सवार हो गये। लोग यह न समझ लें कि मैं पहली बार हवाई जहाज देख रहा हूँ या हवाई यात्रा कर रहा हूँ, इसके लिए मैं पूरा सतर्क था और जितना एडवांस हो सके, दिखने की कोशिश कर रहा था। पेट्टी बांधने के समय अचानक कुछ घबराहट—सा महसूस करने लगा। जैसे ही फ्लाईट टेकऑफ किया मेरे दिल की धड़कन इतनी बढ़ गयी, जितनी ऑफिस में भूकंप के दिन भी नहीं हुआ था। मैं अपने को संभाल नहीं पाया, मेरी घिग्घी बंधने लगी और उसी अवस्था में रुंधे गले से चिल्लाने लगा। चिल्लाने की आवाज सुनकर मेरी पत्नी ने मुझे झकझोर कर नींद से उठाया और कहा कि एजी! कोई भयंकर सपना देख रहे थे क्या? आँख खुलते ही लगा कि एअर होस्टेस मदद के लिए सामने खड़ी है, पर उस जगह मेरी पत्नी खड़ी थी। बात मेरी समझ में आ चुकी थी। मैं थोड़ा संभला, तो उसने उलाहना दी कि ठीक से हाथ पैर धोकर सोया कीजिए अब से। रात में आप खा भी बहुत लेते हैं और आलतू—फालतू बात दिमाग में मत सोचा कीजिए। मैंने भी झल्लाते हुए कहा कि इतना दिन से तो ऐसे ही सोते थे, तो ऐसा सपना कहाँ देखते थे, बात करती हो।

शाम में ऑफिस से वापस घर लौटा तो मेरी छोटकी बेटी बड़े भोलेपन से आकर मुझसे बोली कि पापा, नानी ता फोन आया था। हमलोद तो ममहल जाना है भेत कलने। वो छोटकी मामी है न, वो मामा जी के छाथ दुबई जा लही है। क्या! सुनते ही मेरा मुँह खुला का खुला ही रह गया। एक सपना अपना था, वह भी छिन गया था मुझसे।

+++++

इंटरनेट की लत



देव प्रकाश केशरी
लेखाकार

इंटरनेट का उपयोग हमारे जीवन में काफी महत्वपूर्ण है। इंटरनेट आधुनिक विज्ञान का ऐसा आविष्कार है, जिसने पूरी दुनिया को समेट दिया है। इंटरनेट के माध्यम से हम घर बैठे विश्व में कहीं भी रहने वाले व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं, उसे देख सकते हैं, उससे बातें कर सकते हैं और विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। हमलोग दूसरों से संपर्क बनाए रखने के लिए ऑनलाइन रहते हैं और अपडेट रहने की कोशिश करते हैं। आज इंटरनेट से हमारे देश व समाज को बहुत लाभ मिल रहा है, विकास की दरें इसके द्वारा बहुत तेजी से बढ़ी हैं, लेकिन इसका एक साइड इफेक्ट भी समाज के सामने आ रहा है, जिसे विशेषज्ञों द्वारा 'आईएडी' (इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर) नाम दिया गया है। 'आईएडी' का मतलब है— इंटरनेट का हद से ज्यादा और समय काटने के लिए उपयोग करना। हमारे देश में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों की उम्र लगभग 12 से 40 वर्ष के बीच में है और इस उम्र के लोग इंटरनेट का इस तरह इस्तेमाल करने लगे हैं, जैसे उन्हें इसकी लत लग गई हो। हमारे देश में नशे की आदत सबसे अधिक युवाओं को ही है और कभी किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि इंटरनेट हमारे समाज व देश के लिए इतना घातक बन जाएगा कि हमारे देश की युवा पीढ़ी नशे की तरह इसकी गिरफ्त में होगी और आज ऐसा ही हो रहा है।

इंटरनेट हमारे जीवन में जितना लाभकारी है उतना ही जरूरत से ज्यादा उपयोग घातक भी है। आज देश की नई पीढ़ी व युवा पीढ़ी, दोनों ही 'इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर' नामक बीमारी की चपेट में आ रही हैं और यह तेजी से अपनी पहुँच बढ़ाता जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस मामले को यदि गंभीरता से न लिया गया तो बहुत जल्द इसके गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

हमारे देश के मुंबई और उससे सटे शहर पुणे में तो इंटरनेट एडिक्टेड क्लीनिक की शुरुआत भी हो चुकी है। यहाँ माता-पिता अपने बच्चों को इंटरनेट की लत छुड़ाने के लिए एडमिट करा रहे हैं। 'आईएडी' के जो लक्षण इंटरनेट एडिक्ट युवाओं में देखने को मिल रहे हैं वे हैं— हर दिन पाँच से दस घंटे ऑनलाइन होना, घर से बाहर निकलने का वक्त कम होते जाना, भोजन व काम करने में कम समय बिताना, भोजन मॉनीटर के सामने ही करना, दोस्तों व परिवार वालों से मिलने में कतराना, अपना ईमेल-बॉक्स दिन में कई बार चेक करना, खुद को बहुत अच्छा नेट यूजर समझने लगना, पढ़ाई करते हुए भी ऑनलाइन रहना और अपने कमरे में अकेले रहते हुए इंटरनेट यूज करते हुए राहत महसूस करना आदि।

कई युवाओं की हालत ऐसी हो चुकी है कि किसी दिन यदि वे नेट का उपयोग न करें तो उन्हें अजीब-सा महसूस होने लगता है। यदि ये लोग दोस्तों व परिवार वालों से मिलने-जुलने के बजाय अपना ज्यादा समय नेट पर

गुजार रहें हैं तो यह 'आईएडी' का पहला लक्षण है, लेकिन जिस तरह से युवा वर्ग इंटरनेट का आदी हो रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि बहुत जल्द ही देश के हर छोटे-बड़े शहरों में इसके रोगी देखने को मिल सकते हैं।

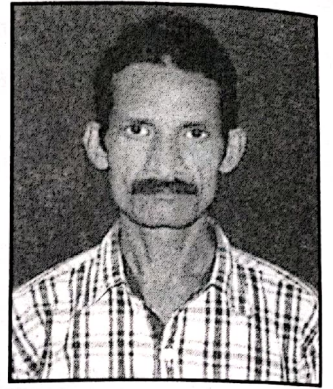
वर्तमान में भारत का स्थान इंटरनेट का प्रयोग करने में एशिया में तीसरा और विश्व में चौथा है। आज भारत के लगभग 50 से 60 प्रतिशत युवा सोशल नेटवर्किंग, पोर्नोग्राफी, ऑनलाइन शॉपिंग और ऑनलाइन गेम्स पर दिन के पाँच घंटे से ज्यादा बिता रहे हैं। वहीं लगभग 20 से 30 प्रतिशत युवा दिन में आठ घंटे ऑनलाइन रहते हैं। ये फेसबुक, ऑरकुट, ट्विटर सहित कई गेमिंग साइट्स का अधिक उपयोग करते हैं।

यदि जल्दी ही 'आईएडी' पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो समाज में एक नई विकृति पैदा हो सकती है। निश्चय ही 'आईएडी' हमारे समाज व देश के लिए एक गंभीर समस्या बन सकती है यदि समय रहते हुए हम सभी इस ओर जागरूक नहीं हुए।

यदि आईएडी को रोकना है तो सबसे पहला उपाय— इससे सतर्क व सावधान रहना ही है, ताकि युवा पीढ़ी इंटरनेट से होनेवाले इस नशे के प्रति जागरूक रहे। दूसरा उपाय— यह है कि आवश्यकता से अधिक इंटरनेट प्रयोग से बचें, जितना जरूरी है, उतना ही प्रयोग करें, तीसरा उपाय यह है— कि घर-परिवार के परिजन, संबंधी व शिक्षकगण 'आईएडी' के बारे में जानकारी रखें और इसे अन्य लोगों को भी बताएँ। हम आधुनिक टेक्नोलॉजी की इन नई बढ़ती हुई समस्याओं से समाधान पा सकेंगे और 'इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर' के दुष्प्रभाव से बच सकेंगे।

+++++

“ गजल ”



मो० आफताब अंसारी,
वरीय लेखाकार

चुपके चुपके रहना सीखा ।
मरते मरते जीना सीखा ।

आँखों की बात वह क्या जाने,
खामोश जुबों से कहना सीखा ।

नहीं है गम बिछड़ने का इन्हें,
वह ख्वाबों में समझना सीखा ।

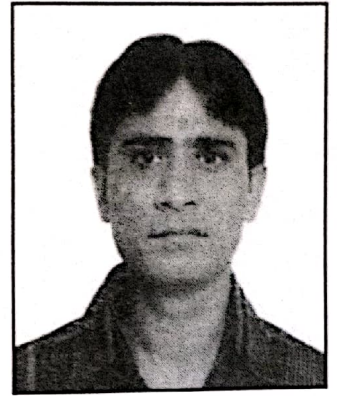
इनको भी याद आता रहूँगा,
वह यादों में आना सीखा ।

डर नहीं है तूफानों का,
मौजों में जो बहना सीखा ।

आस नहीं अब कोई खुशी की,
हर दुःख अनवर सहना सीखा ।

+++++

चिक्की और चाँद



सत्येन्द्र माँझी
एम०टी०एस०

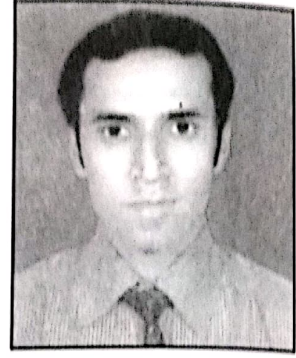
एक था चूहा। उसका नाम था-चिक्की। वह आसमान में चाँद को एकटक देखता रहता। उसे लगता जैसे चाँद कोई पनीर का टुकड़ा हो। चिक्की का मन हमेशा चाँद को खाने के लिए मचल उठता।

एक रात उसने अपने मित्र बंदर को यह बात बताई। बंदर बोला इसमें कौन-सी बड़ी बात है। चिक्की, तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं पेड़ की डाल पर झूलता हुआ आसमान में पहुँच जाऊँगा। तब तुम चाँद को खा लेना। यह सुनकर चिक्की बहुत खुश हुआ। बंदर चिक्की को अपनी पीठ पर बैठकर पेड़ की डाल पर झूलने लगा। वह चाँद तक न पहुँच सका। चिक्की निराश हो गया। वह कुछ सोचने लगा। थोड़ी-ही देर बाद उसके पास एक जिराफ आया। चिक्की ने जिराफ को अपनी इच्छा बताई। जिराफ ने कहा-प्यारे चिक्की, तुम चिंता मत करो। मेरी गरदन पर बैठो। मैं अपनी गरदन ऊँची करूँगा तब तुम चाँद को खा लेना। चिक्की जिराफ की गरदन पर झट से चढ़ गया। जिराफ ने बहुत कोशिश की पर वह भी चाँद तक नहीं पहुँच सका। अब चिक्की ने अपनी बात कबूतर को बताई। कबूतर ने कहा-बस इतनी-सी बात! चिक्की, तुम मेरे पैरों को कसकर पकड़ लो। मैं ऊपर आसमान की ओर उड़ूँगा, तब तुम झटपट चाँद को खा लेना। चिक्की ने वैसा ही किया। कबूतर उड़ा पर वह चाँद से काफी दूर था। चिक्की चाँद को न खा सका। बंदर, जिराफ और कबूतर तीनों ने चिक्की से कहा-हमें क्षमा कर देना मित्र! हम तुम्हें चाँद तक नहीं पहुँचा सके। चिक्की बोला-तुम सब क्यों दुखी होते हो, तुम सबने मेरी मदद करने की कोशिश की, यही बहुत है। तुम सबको छोड़कर मैं आसमान में जाकर चाँद को नहीं खाना चाहता। भले ही वह पनीर से क्यों न बना हो। इतना कहकर चिक्की खिल-खिलाकर हँस पड़ा। उसे हँसता देख बंदर, जिराफ और कबूतर भी हँसने लगे।

जीवन-मूल्य: मुसीबत में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है।

+++++

“ग्रामीण विकास में ई-कॉमर्स की भूमिका”



धीरज कुमार
एम.टी.एस.

विकास का सही मायने में अर्थ होता है, देश के तमाम नागरिकों को दो जून् की रोटी, रहने को अपना आशियाना एवं पहनने को ढंग के दो कपड़े। परन्तु वस्तुतः आजादी के 67 वर्षों के बाद भी हम इस लक्ष्य को नहीं पा सके हैं, जो भारत के दृष्टिकोण से चिंतनीय है। आज किसान ऋण के बोझ तले आत्म-हत्या कर रहे हैं, वहीं मौसम की लुका-छुपी इन्हें और सताती है। दूसरी ओर शिक्षा का कम होना भी इनके अविकास की कड़ी है जिस कारण से ग्रामीण भारत सम्पूर्ण विकास नहीं कर पा रहा है।

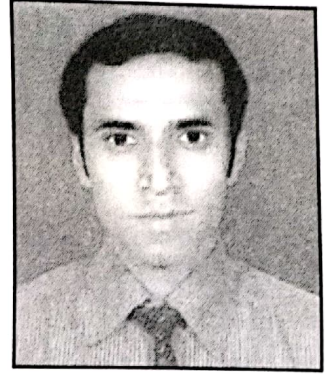
अतः जब ग्रामीण का विकास अच्छे से नहीं होगा तो गाँवों के देश भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा। हम(भारत) मानव विकास की रैंकिंग में 128वें पायदान पर हैं।

समय और सभ्यता के विकास के साथ-साथ आधुनिक व्यापार एवं वाणिज्य पर हम जब दृष्टिपात करते हैं तो हम पाते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य आज व्यापार संचालन में काफी महात्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रहा है। ई-कॉमर्स के अंतर्गत कम्प्यूटर, मोबाईल, ई-चोपाल, कॉल सेंटर, ई-ढाबा का विशेष योगदान है। ई-कॉमर्स के चलने से जहाँ व्यापार में सुगमता हुई है वहीं दूसरी ओर सूचना सम्प्रेषण में भी आसानी हुई है, जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ समाज के प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग को हुआ है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठा कर किसान मुनाफा कमाने में लगे हैं। क्योंकि उन्हें सही समय पर मौसम आदि की जानकारी उन्नत किस्म की बीज फसल की उचित मूल्य पर बिक्री और सबसे बड़ी बात इस प्रौद्योगिकी से दूर-दराज के क्षेत्रों के किसान भी विकसित राज्य के किसान की तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं जिसका सीधा असर हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है।

इस प्रकार वर्तमान में ग्रामीण विकास में ई-कॉमर्स का प्रयोग काफी लाभप्रद सिद्ध हो रहा है क्योंकि इन्टरनेट के माध्यम से गाँवों के लोग अपनी आधारभूत संरचना में भी बदलाव के लिए प्रयास कर रहे हैं, जिससे उन्हें सफलता भी मिल रही है।

+++++

‘अस्पताल यात्रा’



धीरज कुमार
एम.टी.एस.

आप सोच रहे होंगे कि मैंने इस कहानी का नाम ‘अस्पताल यात्रा’ क्यों रखा है तो आगे की कहानी इस प्रकार है—

कानपुर में भास्कर बाबू किसी स्थानीय समाचारपत्र के कार्यालय में सह-सम्पादक का कार्य करते थे। उनका वेतन सामान्य घर-गृहस्थी चलाने जितना ही था। रोज समय पर कार्यालय पहुँच जाना और दिनभर कार्य करके फिर शाम को वापस घर लौटना यही उनकी दिनचर्या थी। एक बार की बात है—मई का महीना था। वह कार्यालय जा रहे थे। अचानक उन्हें चक्कर आया और वह सड़क पर गिरकर बेहोश हो गए। राहगीरों ने किसी तरह उन्हें उठाकर पास के अस्पताल में पहुँचाया। अस्पताल के डाक्टरों ने उनका इलाज करना शुरू किया। शाम को जब उन्हें होश आया तो उन्होंने अपने आपको अस्पताल के बेड पर पाया। पास ही उनकी पत्नी बैठी रो रही थी। कुछ लोग आपस में बातें कर रहे थे कि देखो इस व्यक्ति को कैंसर हो गया है। जल्द ही यह व्यक्ति मर जाएगा तो इसकी पत्नी की देखभाल कौन करेगा? भास्कर बाबू के कानों में जैसे ही यह बात गयी उनके होश उड़ गए। उनके कई सगे-सम्बन्धी उनको देखने एवं संवेदना जगाने आए। उनके चचेरे भाइयों में तो उनकी इलाज की कम बल्कि उनके बाद उनकी संपत्ति का बँटवारा कैसे होगा इस बात की चर्चा होने लगी। उनके मोबाईल पर सहानुभूति के सैकड़ों एस.एम.एस.आने लगे। डाक्टरों ने उक्त बिमारी की इलाज के लिए पैसा जमा करने को उनकी पत्नी को कहा। उनकी पत्नी ने गहने बेचकर पैसे इकट्ठा कर अस्पताल में जमा किया। कुछ दिन इलाज चलने के पश्चात् एक दिन प्रयोगशाला सहायक ने डाक्टरों को जानकारी दी की गलती से दूसरे मरीज की रिपोर्ट भास्कर बाबू के रिपोर्ट से बदल गयी। तब अस्पताल प्रबंधन ने भास्कर बाबू से माफी माँगते हुए उनके असली रिपोर्ट जिसमें उन्हें डिहाईड्रेशन के कारण चक्कर आने की बात लिखी थी, उन्हें साथ ही इलाज का सारा खर्च भी लौटा दिया। तब भास्कर बाबू के मानों प्राण ही वापस लौटे हों, ऐसा उन्हें लगा। वे सोच रहे थे कि भगवान किसी को भी अस्पताल जाने की नौबत ना आने दे।

+++++

देश तरक्की कर रहा है



प्रभास चन्द्र
वरीयलेखाकार

देश में आयी समृद्धि को देख लगता है कि हमारा देश तरक्की कर रहा है। लखपति करोड़पति बन रहे हैं तो करोड़पति अरबपति। हमारे देश के कई अरबपतियों का नाम तो विश्व में प्रथम बीस अमीरों के नाम में शुमार हो रहा है। बड़े-बड़े शहरों में ऊँची-ऊँची अपार्टमेंटों का जाल सा बिछ गया है। छोटी-छोटी दूकानें अब मॉल में परिवर्तित हो गई हैं, जहाँ से जरूरत के सभी सामानों की खरीददारी की जा सकती है। मॉल में सामानों की सजावट देख प्रत्येक परिवार के सदस्य गर्मजोशी से उन सामानों को भी खरीदने हेतु अपने कैरियर में जगह दे देते हैं जो पहले से उनके घर में मौजूद रहता है। यह तो भुगतान करने वाले सदस्य को उन्हें याद दिलाते हुए सामानों के लिस्ट से हटाने हेतु अनुरोध करने पर घर के सदस्य अनमने ढंग से उनकी बात मानने को तैयार होते हैं। पुराने एवं जर्जर हो चुके सिनेमाघरों को मल्टीप्लेक्सों में परिवर्तित किया जा रहा है, जहाँ सिनेमाघरों के अलावा दूकानों की भी व्यवस्था की जाती है यानि मनोरंजन के साथ-साथ खरीददारी की भी व्यवस्था मल्टीप्लेक्सों के द्वारा की जा रही है। हालाँकि ऐसी जगहों पर अधिक पैसों के खर्च की सम्भावना रहती है, फिर भी लोगों के जमावड़े में कोई कमी नहीं पाई जाती है। हिन्दुस्तान में कारों की अनेक कंपनियाँ कार्यरत हैं। प्रत्येक कंपनी अपने बीसियों मॉडल बाजार में बिक्री हेतु उतार रखे हैं परन्तु खरीददारों की इतनी संख्या है कि प्रत्येक मॉडल बिक्री में एक-दूसरे से होड़ लगाती हुई नज़र आती हैं। लोग भी अपनी नई कार में बैठकर अगली बार किसी नई मॉडल की कार लेने को सोचते नज़र आते हैं। हमारे शहर में पहले चौक-चौराहों पर ट्रैफिक सिपाही के रुकने के सिग्नल पर जहाँ रिक्शों की कतारें लग जाती थी, वहीं अब इन चौराहों पर रिक्शों की जगह स्कॉरपियो एवं अन्य मॉडलों की गाड़ियों की लाइन लग जाती है। सरकार को भी इन गाड़ियों की खरीददारी से टैक्स के रूप में अच्छे राजस्व की प्राप्ति हो रही है। प्राप्त राजस्व से सरकार को सड़कों के रखरखाव एवं उनके चौड़ीकरण की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि इनके अभाव में जनता जाम झेलने को बाध्य होती है। शिक्षण संस्थानों के संबंध में भी यही स्थिति है। सरकारी शिक्षण संस्थानों के होने के बावजूद प्रत्येक राज्य में प्राइवेट शिक्षण संस्थानों की बढ़ सी आ गई है। यह स्थिति शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर दिखाई पड़ रहा है। चाहे वह प्राथमिक स्तर पर हो, माध्यमिक स्तर पर हो या उच्च शिक्षा के स्तर पर हो। प्रत्येक शिक्षण संस्थान सफलता के नये आयाम को छू रहे हैं तथा देश के नौजवानों को शिक्षित बनाने एवं उनकी तरक्की में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। यह स्थिति तब है, जब देश में जिनके कंधों पर व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेवारी है उनमें से अधिकांश व्यवस्था के ठीक विपरीत अव्यवस्था फैलाने में मशगूल दिखाई पड़ते हैं। यह सब आये दिन समाचार पत्रों के माध्यम से अवाम को पता चलता रहता है। घपलों एवं घोटालों में उच्च स्तर के

+++++

“ सखी ”



प्रतिमा कुमारी,
व० लेखाकार

ऐ सखी ! बीच राह में छोड़ कहाँ चल दी ?
क्या हुआ ? बताया नहीं; गुम-सुम यूँ चल दी ।
तू ही थी, मेरे सुख-दुख की सहभागी,
अब मैं पथ में अकेली अभागी ।
कहीं भटक गई राह में अकेली,
बता ऐ मेरी प्यारी अली ?
खैर तूने तो मुझसे मुँह मोड़ा,
मुझे यूँ अकेला पथ में छोड़ा ।
याद मेरी सताती तो होगी तुझे,
रहती तो होगी तू भी बुझी-बुझी ।
तू भूल गई वादे, तो क्या मैं निभाऊँगी,
भूलती-भटकती मिलने अवश्य आऊँगी ।
दिल में तेरी तस्वीर लिए साथ,
मैं होती हरपल खाली हाथ ।
पर मन में लिए तुझसे मिलने की आस,
ऐ सखी ! उम्मीदों के दिए जलाए हैं खास ।

+++++

“ ऐसा हो ”

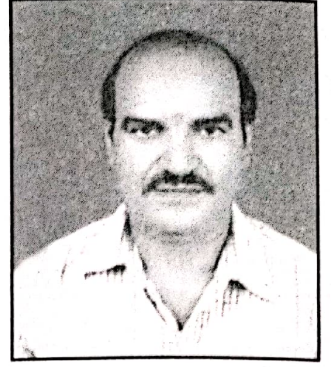


प्रतिमा कुमारी,
व० लेखाकार

जाने आज कैसी धूम मची है,
भाग रहे सब किस ओर ।
दम तोड़ रही है मानवता,
संकुचित हो रही रिश्तों की डोर ।
कहाँ गुम हो गए हम,
भूलकर मानवता का मूल मंत्र ।
बच्चों का बचपन छिन रहा है,
हो रहा ये कैसा घोर षड्यंत्र ।
किस अनजान पथ पर है,
आगे बढ़ने का ये अथक प्रयास ।
जो बना रहा सभी को,
असमय ही काल का ग्रास ।
समझें प्रकृति का इशारा,
खोजें सब मिलकर हल ।
कार्य करें कुछ ऐसा,
सँवर जाए जिससे हमारा कल ।
प्रकृति कहर न बरसाए,
हो इस दिशा में सबका प्रयत्न ।
बना रहे धरती का सौन्दर्य,
‘ऐसा हो’ हर किसी का यत्न ।

+++++

“ गजल ”



शिव शंकर तिवारी
वरीय लेखाकार

आप फिर से जरा मुस्कुरा दीजिए,
मेरी बिगड़ी को फिर बना दीजिए।

माना की दिल्लगी आपको भाती नहीं
आप एक बार मुझसे दिल लगा लीजिए।

हुस्न के जलवों की तारीफ क्या करूँ,
मेरी उजड़ी हुई दुनिया बसा दीजिए।

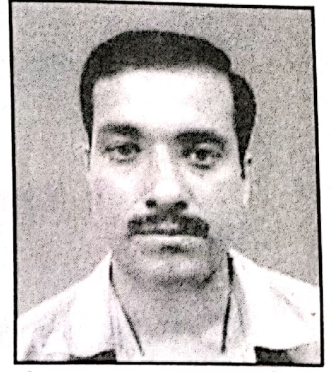
मुझे मय तो मयस्सर हुआ ही नहीं,
जाम नजरों से मुझको पिला दीजिए।

हर तरफ 'तिवारी' आपको ही ढूँढता रहा,
मन-मंदिर में मुझको बसा लीजिए।

आप फिर से जरा मुस्कुरा दीजिए,
मेरी बिगड़ी को फिर से बना दीजिए।

+++++

महात्मा गांधी सेतु



संजय कुमार ओझा
लेखाकार ।

सहस्र कंठों का नम्र निवेदन, हे गंगा! कर लो स्वीकार ।
दया मृत्यु दो गांधी सेतु को, या दे दो जीवन विस्तार ॥

चिंता है ममता की तेरी, मन के एक अनुमान से ।
मां की गोद में मरेंगे बेटे, गिर कर आसमान से ॥

तुम ढूँढ़ लो कोई मार्ग दूजा, अपराधों के बोध से ।
ताकि धार तेरी रुक सके न, लाशों के अवरोध से ॥

तु अनवरत चलना सिखाती, हरि से हर को जोड़कर ।
निर्बाध ऊपर रास्ता दो, तूम सेतु के ब्यूह को तोड़कर ॥

अभियंत्रण का यह श्रेष्ठ कृति, जीवन रेखा बिहार का ।
प्रतीक यह गंगा विजय का, निमित्त मनुज संहार का ॥

अपना जनाजा ढो रहा, अपने ही कंधे पर ये पुल ।
वाहनों में लोग इस पर, दिखते हैं अर्थी के फूल ॥

विच्छिन्न बाहू होकर सेतु, उपचार को आश्वस्त है ।
पर देशी विदेशी शिल्पी, दोनों के कौशल पस्त है ॥

प्रलंब पटल सेतु का कंपित, भूकंप सा होता प्रतीत ।
पापा निकल लो तेज चलकर, बोलते बच्चे भयभीत ॥

पापा का विश्वास भी, सेतु के संग ही कांपता ।
अग्निपथ पर बढ़ रहे, खतरे को हरपल भांपता ॥

दंतसंधि पर ऐसे जुड़े हैं, सेतु के प्रस्तर पटल।
वी-आकार की घाटी में, मार्ग हो कोई विकल॥

मृग में भय दिखता है, जितना जंगल के आग से।
उससे ज्यादा डर यहां, बेबीलोन के झूलते बाग से॥

हृदय गति बढ़ता जाता है, पर अंत समय नियराता है।
इस लक्ष्मण झूले की नियति, समझ नहीं कुछ आता है॥

क्या करेगा खाकर तरस, दैव भी यहां आदमी पर।
सितारे भी मजबूर होकर, जब रेंगते यहां जमीं पर॥

यहां वाहनों की श्रृंखला में, खो जाता दोनों किनारा।
इसे पार करना हो सुरक्षित, भाग्य का ले लो सहारा॥

तकदीर का ही खेल यहां, मांगे नहीं मिलता है नीर।
यहां बासी चावल बेचते हैं, बोल करके ताजा खीर॥

कहीं कहीं है तंग पथ, दो तरफी वाहनों की कतार।
और बीच में दिखते हैं गड्डे, या वसूली का व्यापार॥

अहोरात्र कटता पथिक का, धुम्र का लेकर निवाला।
सोया, खड़ा, बैठा यहां कोई, हो अंधेरा या उजाला॥

चलती हवाएं, चलती घटाएं, नीचे बहती नदी की धार।
पर चक्के ऊपर रुके हुए, यहां जीवन की थामें रफ्तार॥

कह जाम है या यम है ये, या है कोई माया जाल।
या नरक का द्वार है ये, जहां पैजनी बजाता काल॥

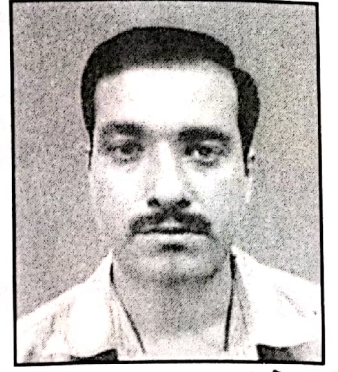
पार कर बैतरनी को रुह, जाता है पर लोक में।
सुरसा बना दुर्लभ्यं सेतु, गंगा पर मृत्यु लोक में॥

है गुजरना अभिशप्त पुल से, मजबूर होकर काम से।
प्रेमी युगल है संग दिखते, बदरंग सा कुछ जाम से॥

फुटपाथ पर चलना मना है, अल्हड़ों की चाल से।
दोपहियों को झेल कर, सब हो गए है बेहाल से॥

सबब है बीच में कोई, वाहन खड़ा होकर खराब।
 पर हकीकत और कुछ, बस देखिए आगे जनाब ॥
 होकर ऊपर नीचे साइड दे दो, हुक्म की करो तामिला।
 सर्र से है गुजरने वाला, यहां लाल बत्ती का काफिला ॥
 खून के आंसू है रोती, मेंहदी दुल्हन के हाथ में।
 बारात दुल्हे का नहीं, पहुँचा मिलन की रात में ॥
 बिहवल बिलखता पुत्र यहां, फर्ज की दे कर दुहाई।
 कैसे भला वह दे सकेगा, मां को अब अंतिम बिदाई ॥
 जीवन बेचारी हार जाती, घुंट कर आतुर वाहनों में।
 करुणा भरी चीत्कार भीषण, छिद्र करती पाहनों में ॥
 लोकतंत्र की मर्यादा, धू-धू कर जलती आग में।
 सेतु पर खड़े हैं हम या, जालियाँ वाला बाग में ॥
 अगस्त्य से हैं मनुज कुछ, जो पी जाते हैं समुंदर।
 चुल्लु में रख लेते दरिया, ऐसे भी यहां है धुरधूर ॥
 एक अकेला दशरथ मांझी, यहां चीर कर पहाड़ को।
 राह बना के दिखा दिया, अपना पौरुष सरकार को ॥
 बिछी हुई है बिसात सेतु पर, राजनीति के फणकारों की।
 इतिहास न देखा होगा ऐसा, महिमा कुटिल विचारों की ॥
 हटो की जनता आती है, अब मांगने अपना हिसाब।
 बेटा बिलखता भूख से, और बाप को चाहिए शराब ॥
 जालिम हमारी ताकत को, तुम आंकते हो कम।
 इन्द्र को पद च्युत करके, स्वर्ग को लुटेंगे हम ॥
 दे दो माँ हमें ऐसी शक्ति, जिसका हो सके संधान।
 जो उद्धार करे इस सेतु का, या करे नया निर्माण ॥
 भगीरथ के दग्ध कुलज को, दिया मुक्ति हे अम्बे।
 शरणागतम् त्राहिमाम् च, नमामि गंगे, नमामि गंगे ॥

मैं मगन ममधार में



संजय कुमार ओझा
लेखाकार।

हार कर भी जीतने को, तुम खड़े हो आइ मैं।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

गर्जन करता नभ में बादल, आपस में टकराकर।
सन्नाटे में संधात परस्पर, कौन करे यहां आकर॥

कैसा प्रेम छिपा दिखता है, दोनों के ललकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

करे प्रहार घातक दोनों, पर मन में प्रेम समाया।
बेध रहा है अर्जुन अपने, तात् भीष्म की काया॥

मन का रुदन सुनाई देता, धनवा के टंकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

मैं आंखों देखा हाल सुनाऊं, धर्मक्षेत्र के रण से।
आर्तनाद यहाँ गूंज रहा, अबला के चीर हरण से॥

समां बंधेगा युद्ध भूमि में, शोणित के फुहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

इस युद्ध के उन्माद में, यह कह रही वीरांगना।
सर्वस्व मेरा लुट चुका, अब शेष क्या मांगना॥

ध्वज मेरा झुके नहीं है, बस यही मेरे विचार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

ऐलान करती जंग का, करना नहीं जौहर मुझे।
बन के मीरा प्यार में, पीना नहीं है जहर मुझे॥

छोड़कर वीणा को मैं, हूँ रम चुकी तलवार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

चूड़ियाँ किसकी जिसमें, तुम थामे धनु हाथ से।
याचना करता अभय का, पराक्रम छोड़ बात से॥

समर में तुम क्लीव सा, भयभीत हो हुंकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

छल से तुम हरते कवच, अभिन्न मेरे गात्र से।
पर सारथी के संग, जल जाओगे ब्रह्मास्त्र से॥

पर मैं नहीं बांधूंगी तुमको, वादे के अनुसार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

विष में बुझे अमोध सारे, निषंग के हैं तीर सब।
द्वन्द्व में समर्थ मुझ से, नहीं है अर्जुन वीर सब॥

क्षत्र धर्म के दम्भ में, मिट जाओगे खुमार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

जीत कर क्या मिलेगा, पर हार के मिट जाओगे।
जीवन के शतरंज में, प्यादे से सह तुम पाओगे॥

तलवार बन जाएगी कंगना, मीठे से प्रहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

रक्षार्थ तेरे महारथी सब, काल के आह्वान पर।
खड़े हैं सम्मुख चमू में, जीवित मेरे अवदान पर॥

तय वीरगति वीभत्स मानो, पाप के परिहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

यहाँ हंस बना बगुला कैसे, जो चुगने वाला मोती।
प्रचंडता से जलता दीपक, है खोया अपना ज्योति॥

उड़ने वाला रेंग रहा यहाँ कछुए के रफ्तार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

सीधा अनुपात दर्द का, उँचाइयों से है सही।
पर पतितों को पतन का, दर्द होता है नहीं॥

है दर्द का तासीर उलटा, गम के पारावार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

दुश्मन बढ़ ले आगे भले, साथी कोई छूटे नहीं।
अपने इस जज्बात में, मैं छूट गई पीछे कहीं॥

मिलती है मंजिल हमेशा, स्वयं पर एतबार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

जीव मिलता ब्रह्म से, जैसे सारे अंतर पाट कर।
मैं मिली तुम से वैसे, सारा बंधन काट कर॥

अनर्थक इस मिलन का, रहा अंजाम तिरस्कार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

त्रास देते हो मुझे तुम, आत्मा को छेड़ कर।
गीध बन कर बैठा तू, मेरे घर के मुंडेर पर॥

कुहुंकोगे तन्हाई में तुम, अपने भी घर द्वार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

श्वाती में जब मेघ का, कोई बूंद जाता है भटक।
सीप में पड़ने के बदले, वो बांस में जाता अटक॥

अर्बुद सा वह बूंद पलता, अपने ही पालनहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

तेरी साया काली घनेरी, बर्बादी का पैगाम है।
कलंक का चलचित्र बन, दिखता खुलेआम है॥

बोतल का जिन्न तुम, अब बंधोगे मंत्रोच्चार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

जिंदगी तेरी सलामत है, इससे अच्छी बात क्या।
शेष है उम्मीद तेरी, क्या इस पर तुम इठला रहा॥

पर भूल मत जीवन मिला, मौत से उधार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

मैं करुं शिकवा क्या तुझसे, ये मेरी तौहीन है।
दर्दों गम के खेल का माना कि तू शौकीन है॥

खौफ का मंजर दिखेगा, खुद के ही दीदार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

पाक दामन रब कसम, कोरा कागज मन मेरा।
मर्यादा मैं ही देखती हूँ सदा चाँद का सुंदर चेहरा॥

चाहे जो कोई मुझको समझे, अपने विचार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

फितरत है ना ही ख्वाहिश, कामिनी के रूप का।
दुर्भाग्य से मैं कंज वह, खुद मारा हुआ धूप का॥

क्या करुंगी सजके अब मैं, सोलहों शृंगार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

कांप कर कातिल अदा, क्या दिखाती ये जमी।
मैं हूँ उन्मुक्त भय से, तुम दिखती डरी सहमी॥

दे नहीं सकती तू मुझको, मौत को उपहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

जलजला आकर भूला देती है, गिनती लाशों की।
आरजू सुनता नहीं यम, टूटती-थमती सांसों की॥

मुझे बुलावा भेजोगे क्या, डोली और कहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

आग की बहती है दरिया, दसों दिशायें जल रही।
आंधियों की सनसनी में, भीषण तबाही चल रही॥

कयामत के लम्हों में हूँ, मैं खोई सी गुब्बार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

मेरी ये घनीभूत पीड़ा, दाहक अधिक है आग से।
खा कर धक्के बाहर है, खुद बागवां ही बाग से॥

जिंदगी मेरी नहीं अब, स्वयं के अख्तियार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

दो बरसते मेघ थक कर, दहक रहे अंगार बन।
शाम-ए-फुर्कत आ गई, मेरे लिए दरकार बन॥

मिला कभी और ना मिलेगा, दर्द ऐसा प्यार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

पल में सदियां जीने वाले, जीने का रस जानते हैं।
प्रेम में कुर्बानी को ही, ईश्वर की रहमत मानते हैं॥

मर कर जीने का मजा, सीख लो व्यवहार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

दौड़ कर आये कन्हाई, द्रौपदी की सुन पुकार।
वीरों से खाली यह धरती, कैसे हो मेरा उद्धार॥

व्यक्त पीड़ा यह मेरी, मेरे भाव के उद्गार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

झूठ का है मुंह काला, सच को है हानि नहीं।
हंस पीता दूध केवल, मिलावट का पानी नहीं॥

मैं कभी नहीं रहने वाली, हाँ तेरे अधिकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

जितीया करती माँ तेरी, आयु की तेरी ढाल बन।
वरण मेरा वैधव्य योग, खा जाता तुझे काल बन॥

मेरी कुंडली को नहीं, है लाली कभी स्वीकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

मैं चौथ का चंदा आली, स्वयं ही अभिशप्त हूँ।
गरल मैं सागर मंथन का, खुद से ही त्रस्त हूँ॥

मैं मौत के ही रूप में हूँ प्रगट तेरे आगार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

ना उर्वशी, रम्भा नहीं मैं, नही अप्सरा मैं मेनका।
ना कोई गणिका पेशेवर, शोभा नशीली रैन का॥

मासूका दिखी तुझे मैं, होते ही नयना चार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

खोखला मुझको समझ, तुम ठोकते मुझे बार-बार।
पर मैं नहीं तुझे ठोकती, सोच कर मन का बीमार॥

थक गई तुमको बचा कर, आपसी यलगार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

मैं सुदर्शन हूँ हरि का, हर का अमोघ त्रिशूल हूँ।
देवराज का वज्र मैं, तेरे जीवन का एक भूल हूँ॥

एक नाता तुझसे मेरा, छिपा राखी के तार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

कलियुगी रामायण में, तुम रावण का चरित्र है।
राम की सीता मगर, इस युग में भी पवित्र है॥

प्रणय की तू छोड़ आशा, होके लीन ब्रह्मचार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

एक वचन मैं और देती, रूप में वरदान के।
कर लो प्रयोग सारे, जो शेष हैं अरमान के॥

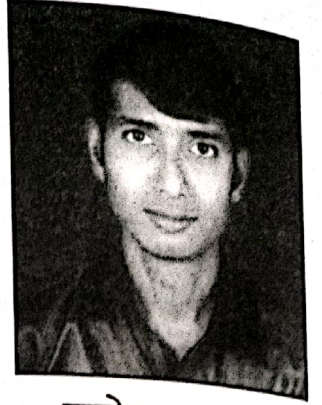
जीवित पराजित होकर भी, बचोगे हर बार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

हावी तुम पर हो रहा, बोझ कुत्सित कर्म का।
पड़ने वाला बोझ दूजा, लोक निन्दा शर्म का॥

जी सके तो जी लेना, अन्तर के हाहाकार में।
जय पराजय से परे अब, मैं मगन ममधार में॥

+++++

राह के रोड़े



राजेश कुमार
डाटा इण्ट्री ऑपरेटर

सौ सीढ़ियाँ चढ़कर भी, मैं नीचे ही रह गया।
कोसों पीछे चलने वाला, आगे मुझसे बढ़ गया।।

मन ही मन खुश हो रहा था, देख कर यहाँ हर गली।
पर मैं चला था जिस गली से, वह बंद आगे हो गया।।

एक कोने में पड़ा मैं, सारा जहाँ को देखता ।
पर हाय रे किस्मत मेरी, मैं हर नजर से खो गया ।।

थक गया आवाज देकर, ले चलो मुझको भी संग ।
पर मेरे हमराहियों का, रास्ता ही अलग हो गया ।।

कंसोल ऑपरेटर का पद, जो तय था मिलना मुझे।
वह पद प्रोन्नति पर मुझको, मिलते मिलते रह गया।।

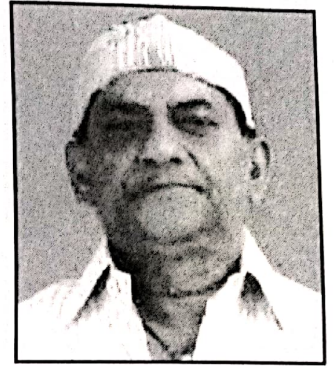
डी०ई०ओ० जो मेरे जैसे, हैं कार्यरत उल्लास में।
है उदासी का सबब, यह पद विलोपित हो गया।।

एक जगह ही बैठे-बैठे, नींद मुझको आ गई।
सपनों का था जो सहारा, वह भी चोरी हो गया।।

मैं करुं एक प्रार्थना, ध्यान उस पर दीजिए।
बंद मेरे रास्ते के खुलने की व्यवस्था कीजिये।।

+++++

निरगुण

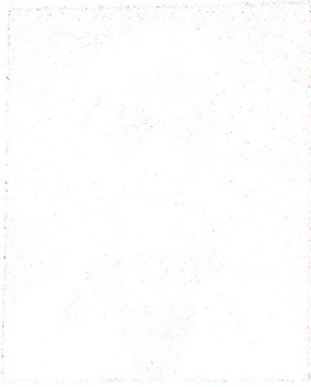


बनवारी सिंह
लेखाकार

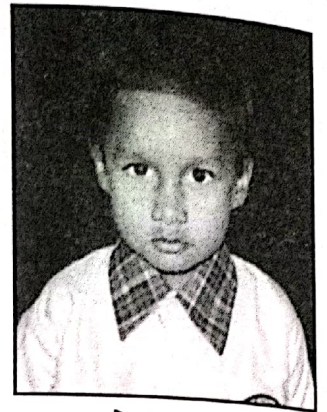
लोगना काहे खातीर डाकु बइमान बनल बा, ई शरीरीया रऊआ माटी के मकान बनल बा ।
जो कुछ करबा कमाई, रऊआ आगे आगे आई ।
तोहरा जाये खातीर बाँस के बिमान बनल बा, ई शरीरीया रऊआ माटी के मकान बनल बा ।
माता पिता के भुलईला, मेहरी के फैशन में झुलवला ।
मेहरी खास लगे पान के दुकान बनल बा, ई शरीरीया रऊआ माटी के मकान बनल बा ।
करबा जनता के भलाई, भगवान भेजीहैं मिठाई ।
तोहरा खाए खातीर सतुआ-पिसान बनल बा, ई शरीरीया रऊआ माटी के मकान बनल बा ।
कहे बनवारी निर्गुन गाई ए० जी० आफिस के केयर टेकर बा भाई ।
अंतिम वेला में जाये खातीर बाँस के विमान बनल बा,
लोगवा काहे खातीर बईमान बनल बा । ई शरीरीया रऊआ माटी के मकान बनल बा ।

जय हिन्द जय भारत

+++++



वंदना



मो० शादाब,
पुत्र-मो०-आफताब अंसारी

तुमने हमको अन्न दिया है।
सभी तरह का धन दिया है॥

हम सब तेरी सूरत हैं।
हम सब तेरी मूरत हैं॥

हम तेरी वंदना करते हैं।
हम तुझको शीश नवाते हैं॥

स्वामी तू हम सबका है।
यहाँ नहीं कोई किसी का है॥

भोले-भालों का तू प्यारा।
छोटे-बड़ों का तू सहारा।

हम तेरी वंदना करते हैं।
हम तुझको शीश नवाते हैं॥

+++++

और मैं पानी-पानी हो गया



श्रीराम पाण्डेय,
सहायक लेखा अधिकारी

आज मैं बहुत खुश था। महीने की अंतिम तिथि थी और इस दिन मेरे जैसे वेतनभोगियों को पर्व-त्यौहार, जन्म या विवाह समारोह से भी ज्यादा खुशी की अनुभूति होती है। भले ही यह खुशी दो-चार दिनों की ही क्यों न हो। इसके बाद तो फिर अंगुली पर गिनते हुए अगली सैलरी का इंतजार होने लगता है।

हाँ तो वेतन मिलने की खुशी में इतराते हुए बेटे के साथ मार्केटिंग को निकला था। मुझसे भी कई गुणा अधिक मेरा बेटा खुश था और इतरा रहा था। उसकी किसी उच्छृंखलता पर उसे नसीहत देने लगा कि कोई कुछ भी दे, बिना मम्मी या मेरे परमिशन के कभी मत लेना। इस तरह के काम लावारिस और गरीबों के बच्चे करते हैं क्योंकि उनके माँ-बाप उन्हें किसी भी प्रकार के संस्कार नहीं सिखाते। बल्कि यह शिक्षा देते हैं कि कोई कुछ दे तो बिना देरी किये झपट लो, नहीं तो किसी और को यह मौका मिल जायेगा और तुम हाथ मलते रह जाओगे। बेटा बिना प्रतिवाद किये बड़े ही मनोयोग से मेरी बात सुन रहा था। उसे पता था कि आज पापा को नाराज करना ठीक नहीं। जो भी फरमाइश करूँगा, अवश्य पूरी होगी।

इसी बीच मेरे बेटे की ही उम्र का अर्थात् आठ-दस साल का दीन-हीन, फूहड़-सा दिखने वाला एक लड़का हमारे पीछे-पीछे अपनी दाँत निपोरते हुए चलने लगा। अक्सर वह मेरे निवास के आस-पास दिखाई देता था। परंतु कौन है, क्या है, मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैं अपने बेटे को उसे दिखाते हुए बोला-“देखो, यही होते हैं गरीब और लालची बच्चे। जानते हो न, अभी हमारे पीछे चलने का इसका बस यही मकसद होगा कि हमलोग इसको पैसे या कोई सामान लेकर दे दें और यह खुशी-खुशी उसे लेकर चला जाय।” बातें करते-करते हम एक किराने की दुकान पर पहुँच गये थे। वह लड़का भी हमारे पीछे उसी तरह अपनी भद्दी दाँत दिखाते हुए खड़ा हो गया। मैं उससे पीछा छुड़ाने की गरज से दस रुपये का एक नोट देते हुए बोला कि लो और यहाँ से दफा हो जाओ। परंतु जब वह पैसा लेने से मना कर दिया तो मुझे क्रोध आने लगा, “पाँच सौ का नोट चाहिये क्या तुम्हें?”

फिर उस फूहड़, लोफड़, उज्जड़, लावारिस.....ने जो कहा वह मेरे पूरे वजूद को प्रकम्पित कर गया, “नहीं अंकल, मुझे पैसा नहीं चाहिये।” मेरे बेटे की ओर देखते हुए बोला-“मैं इस भैया को देखने आया हूँ। गाँव में बिल्कुल भैया के ही जैसा मेरा एक दोस्त था। बहुत दिनों से उसे देखा नहीं हूँ। जब भी भैया को देखता हूँ तो लगता है कि मेरा वह दोस्त मेरे सामने खड़ा है।” मेरे माथा में या फिर उस माथे के अंदर के माथा में, जिसकी अनुभूति शायद मुझे पहली बार हो रही थी, अचानक पीड़ा होने लगी। उस फूहड़, लोफड़, उज्जड़, लावारिस.... के सामने अपने-आप को कितना तुच्छ महसूस कर रहा था मैं! बेटे से लगभग माफी मांगते हुए कहा कि आज तबियत कुछ ठीक नहीं, चलो सामान लेने अब कल आर्येंगे। वह भौंचक्का हो सोचने लगा कि अचानक पापा को हो क्या गया है?

+++++

प्रकृति का संदेश



नयला समरीन,
पुत्री-मो० आफताल अंसारी

फूलों से तुम हँसना सीखो,
भौरों से तु गाना ।

सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना ।।

मुर्गे की बोली से सीखो,
प्रातःकाल उठ जाना ।

मेंहदी के पत्तो से सीखो,
घिस-घिसकर रंग लाना ।।

फलदार वृक्षों से सीखो,
फल पाकर झुक जाना ।

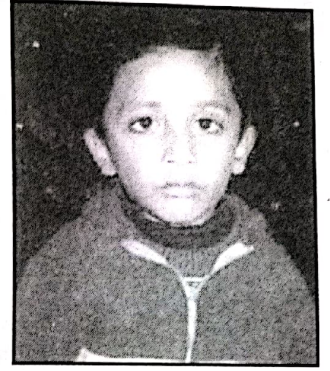
पतझड़ के वृक्षों से सीखो,
दुःख में न घबराना ।।

अग्नि और धुँए से सीखो,
उँची मंजिल जाना ।

फूलों से तुम हँसना सीखो,
भौरों से तुम गाना

+++++

खूब बड़े हो जाओगे



ऋषव माँझी
पुत्र सत्येन्द्र माँझी

आलू बोला मुझे खा लो,
सेहत अपनी खूब बना लो।

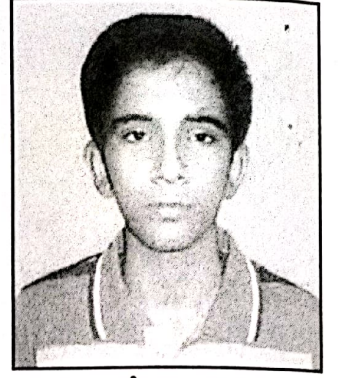
पालक बोली मुझे खा लो,
खुद को ताकतवर बना लो।

गोभी, मटर टमाटर बोले,
हम सबको जो खाओगे।

तो खूब बड़े हो जाओगे।

+++++

पेट का त्योहार



अमृतांशु पुष्कर,
पुत्र-श्री प्रेम निवास मिश्र
(सहायक लेखा अधिकारी)

अपने डियर स्कूल में आज,
खिचड़ी की रौनक छाई है,
छोटन, गुल्लन, सोहन, मोहन,
सबने चटाई बिछाई है।

नाथराम, हलवाई का बेटा,
दौड़ा-दौड़ा आया है,
बस्ता, कॉपी, कलम के बदले,
नमक की पुड़िया लाया है।

मस्जिद के पीछे वाला अब्दुल,
घर से चटनी लेकर आया,
लुका-छिपी के खेल-खेल में,
हमने उल्लू उसे बनाया।

कहाँ कोई ऐबसेन्ट भला है,
सारे के सारे आए हैं,
मैदान में बाहर बैठे हम सब,
खाने पर नजरें टिकाए हैं।

क्लासों में है बन रहा खाना,
बाहर बहार सी छाई है,
क्रिकेट, कबड्डी, गिल्ली-डंडे की,
छिड़ी घमासान लड़ाई है।

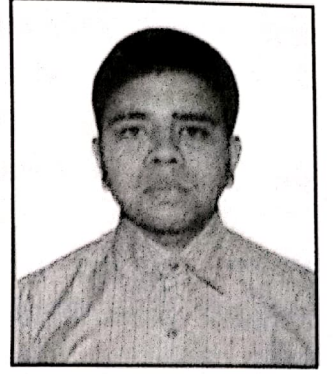
मैडम जी के जलवे क्या कहने,
चेहरे पर चमक तिहाई है,
और हेडमास्टर कक्ष में अपने,
बैठे ले रहे जम्हाई हैं।

भागो-पकड़ो उस तितली को,
वह सुन्दर फूल ले आओ,
चिड़िया पकड़ो, पकड़ो बिल्ली,
ऊपर से पटको, खूब सताओ।

यह बेतरह मौका आया है,
आओ इसे न आज गँवाएँ,
टन-टन-टन-टन बज गई घण्टी,
चलो चलें सब मिलकर खाएँ।

+++++

यादों के फोल्डर से



अश्विन अनुराग,
पुत्र-श्री प्रेम निवास मिश्र
(सहायक लेखा अधिकारी)

जब से जनकपुर और गोपालपुर थाने को सम्मिलित रूप से 'गोपालपुर थाना' के नाम से जाना जाने लगा, तब से हमारे गाँव मधुबन से निकटतम थाने की दूरी मात्र पन्द्रह किलोमीटर रह गई। तभी से हमारे गाँव के छगन भईया उर्फ छोटा राजन, अक्सर किसी ऐरे-गैरे-नत्थू खैरे से कहते दिख जाते, “अरे का हो! चिन्ह नहीं रहे हो का हमका। थाना में हमरा कम्पलेन करोगे। जाओ, कर दो।” हर सुबह जब छगन भईया ऑखों पर काला धूप चश्मा लगाए और गले में सफेद गमछा लहराते हुए निकलते तो क्या मजाल की उनकी बुलेट की हड़हड़ाहट के सामने कोई फड़फड़ाहट टिक जाए। स्वाभाविक था, अब खाकी तो विरले ही कभी मधुबन में दिखाई पड़ती थी।

अभी हफ्ते भर पहले की ही बात है जब गफूर चाचा की बेटी शबीना का निकाह होना था। दूर-दराज से गफूर चाचा के बड़े-बड़े व्यापारी दोस्त पहुँचे थे। अब आप ही बताइये कि ऐसे में दरवाजे से जलेबी की भरी-पूरी टोकरी गायब हो जाना कितने शर्म की बात है। राम! राम! सोचकर ही शर्म आती है। मेहमानों को केवल रसगुल्लों और राजभोग से ही संतुष्ट होना पड़ा। किसी बाहरवाले नादान ने पटाक से सलाह दे दी की क्यों न थाने में रपट लिखा दी जाए। इस पर गफूर चाचा का बीपी कुछ इस कदर चढ़ा कि सभी सकते में आ गए, “अमों तौफिक, नालायक कहीं का ! तू नालायक का नालायक ही रहेगा। अब जो तेल में पन्द्रह किलोमीटर जीप लेकर जाने में जलाऊँगा, उतने में फिर टोकरी भर जलेबी ना बाजार से आ जावेगी।” चाचा के इस विचार से उस दिन हम सभी सहमत दिखे। खैर, इस घटनाक्रम से एक बात जो स्पष्ट हो गई थी वह यह कि तौफिक, जो कि बारह साल का एक लड़का है, नालायक था, आज भी है, और हमेशा ही नालायक रहेगा। हाँ, तो हम बात कर रहे थे अपने छगन भईया की। उनकी एक बड़ी पुरानी आदत या यूँ कहें कि चारित्रिक विशेषता यह थी कि वह प्रतिदिन सुबह आठ बजे हमारे दरवाजे पर आ धमकते और चाय की माँग कर बैठते। कहने को तो वह केवल चाय ही पीने आते, किन्तु जाते-जाते पाँच-छः बिस्कुट, पाव भर नमकीन, कटोरी भर दही, इत्यादि इत्यादि डकारते जाते। वैसे तो हम शुरु से ही बड़े संकोची स्वभाव के रहें हैं, परन्तु एक बार हमने भी उन्हें टोकने की हिमाकत कर ही दी; कहा, “आजकल भाभीजी ने राशन-पानी बन्द कर रखा है का ?” इसपर छगन भईया बड़े जोर से कान खुजाते हुए बोले, “आँय, का बोले ? सुनाई नहीं दिया।” इतने में ही हम सकपका गए, “नहींऊ तो हम

कह रहे थे.... आज गर्मी बहुत ज्यादा है न ? “हाँ, सही बोल रहे हो भाई,” छगन भईया गमछे से अपना मुँह पोछते हुए बोले ।

वैसे यँ तो हमें यह बात करनी नहीं चाहिए परन्तु बिना किए हमारे पेट का पानी कहाँ पचने वाला । अपने छगन भईया को बड़े लम्बे वक्त से एक भ्रम या यँ कहें कि एक खुशफहमीग़लतफ़हमी.....वह जो भी है वह यह है कि समूचे जिले की लड़कियाँ उन पर मरती हैं । हालांकि इस तथ्य को बहुतों का समर्थन प्राप्त नहीं है लेकिन बावजूद इसके छगन भईया के वैवाहिक जीवन की जानकारी केवल कुछ गिने-चुने लोगों को ही प्राप्त है । सौभाग्य से हम भी उनमें से एक हैं । इसी संदर्भ में एक बड़े रोचक प्रसंग का व्याख्यान हम करना चाहेंगे जो कि पिछली सर्दियों में ही घटित हुआ था । हुआ कुछ यँ था कि बिलालपुर नगर पंचायत के सुविख्यात ग्वाले लखन सिंह यादव कि कनिष्ठ पुत्री शन्नो पर अपने छगन भईया का दिल आ गया । असल में छगन भईया बिलालपुर अपने एक दूर-वाले मित्र के वैवाहिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने गए हुए थे । बस वहीं नज़रें मटकी और छगन भईया शन्नो रानी को दिल दे बैठे । और आगे फिर जो होना था वही हुआ ।

एक सुबह जब शौच आदि से निवृत्त होकर हम बड़े इत्मीनान से दरवाजे पर कुर्सी लगाए अख़बार के पन्ने पलट रहे थे कि तभी अचानक दूर कहीं से बुलेट के हड़हड़ाहट की ध्वनि कानों में पड़ी । सुनते ही हमने माथे पर अख़बार दे मारा या यँ कहें कि अख़बार पर माथा दे मारा क्योंकि इस प्रक्रिया के प्रश्चात् अख़बार निश्चित ही दो भागों में विभाजित हो गया । आते ही छगन भईया ने एक डिब्बानुमा वस्तु हमारे सामने चारपाई पर रख दी । हमने उसे निहारते हुए पूछा कि “ई का है ?” भईया ने बताया, “अरे सेंट मँगवाए हैं, फ़ौस से, लगाके देखो । आज एक बड़े ही खास आदमी से मिलने जाना है ।” फिर कुछ सेकन्ड का विराम लेते हुए बोले, “अरे तुम भी चलो ना हमरा साथ । बड़ा मज़ा आएगा । जाओ तैयार हो के आओ ।” ना कहने की हमारी हिम्मत कहाँ थी । बड़े ही बुझे मन से तैयार होके हो लिए उनके साथ बुलेट पे । कुछ गड़बड़ी की आशंका सुबह से ही लग रही थी । खैर आगे जो हुआ वह सुनिए ।

छगन भईया हमें बैकसीट पर बैठकर जा पहुँचे बिलालपुर । एक छोटे से मन्दिर के सामने गाड़ी लगाई, हमें वहीं ठहराया और रुकने को कहकर आगे बढ़ गए । बड़े जोरों की भूख लगने लगी थी । अतः हम बगल के ठेलेवाले से पाँच रूपए की पकौड़ियाँ लेकर खाने लगे । अभी बमुश्किल से पन्द्रह-बीस मिनट ही गुज़रे होंगे की तभी छगन भईया पागलों से भागते आते दिखे । पीछे-पीछे आठ-दस आदमी हवा में लाठी, डंडे, हॉकी स्टिक लहराते हुए । उनमें सबसे आगे लखन सिंह हाथ में हँसुआ लिए चिल्लाते हुए, “काट दूंगा साले !” छगन भईया ने दूर से ही मोटरसाईकिल स्टार्ट करने का इशारा किया और हमने कर भी दी । पीछे से छगन भईया ने एक लम्बी छलांग लगाई और उसके बाद हमने ऐसी लगाम कसी कि फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा । मोटरसाईकिल फिर सीधा हमारे दरवाजे पर ही रुकी । क्या कहें, बाल-बाल बचे थे । वह दृश्य आँखों के आगे आते ही आज भी बदन में सिहरन सी पैदा हो उठती है । इस घटना के बाद हमें आशा थी कि शायद छगन भईया कहीं सुधर जाएँ । किन्तु हुआ इसका विपरीत । आजकल तो वह और बिगड़ गए हैं और असामाजिक तत्वों के साथ उनकी संलिप्तता दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है । अभी कुछ दिनों पहले ही सुनने में आया था कि छगन भईया ‘गोल्ड बिस्किट’ के काम से जुड़ गए हैं । अब भई हम तो सिर्फ पारले-जी बिस्किट के विषय में ही जानते हैं । यह शायद कोई नई कंपनी मार्केट में आई है । खैर, अपने छगन भईया काम जो भी करें, हमारी

ओर से उन्हें हार्दिक शुभेच्छा और ईश्वर करें कि वह फिर कभी पिट ना जाएँ। रिकॉर्ड तो उनका वैसे ही खराब है।

बड़ी तकलीफ हो रही है मित्रों आपसे विदा लेने में। परन्तु क्या करें जनाब; विद्यार्थी जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना तो यही है कि जब भी कोई महत्वपूर्ण चर्चा करने बैठे तो कर्महीनता की भावना काट खाने को दौड़ती है। यह जो एक वाक्या हमने सुनाया आपको यह तो मात्र एक छटांक भर है छगन भईया के कारनामों की लम्बी-चौड़ी फेहरिस्त का। आशा है कि जब अगली दफ़ा आपसे मुलाकात होगी तो अपने और छगन भईया के जीवन के कुछ और अनछुए पहलुओं से आपको अवगत कराने का अवसर मिले। लेकिन फिर भी अगर आप छगन भईया से मिलने को बेहद तत्पर हैं तो हमारे गाँव मधुबन में आपका सहर्ष स्वागत है। आखिर हमें भी आपकी सेवा का मौका तो मिलना ही चाहिए। तब तक के लिए आपकी आज्ञा चाहूँगा। आपका आज्ञाकारी, दीन, नगण्य सेवक-चन्दन।

.....ग.....

+++++



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के समापन समारोह के शुभ अवसर पर माननीय महालेखाकार (ले० एवं हक०) महोदय श्री संजय कुमार के साथ श्री मुकेश कुमार लाल, वरीय उप महालेखाकार, बिहार पटना, दीप प्रज्वलित करते हुए।



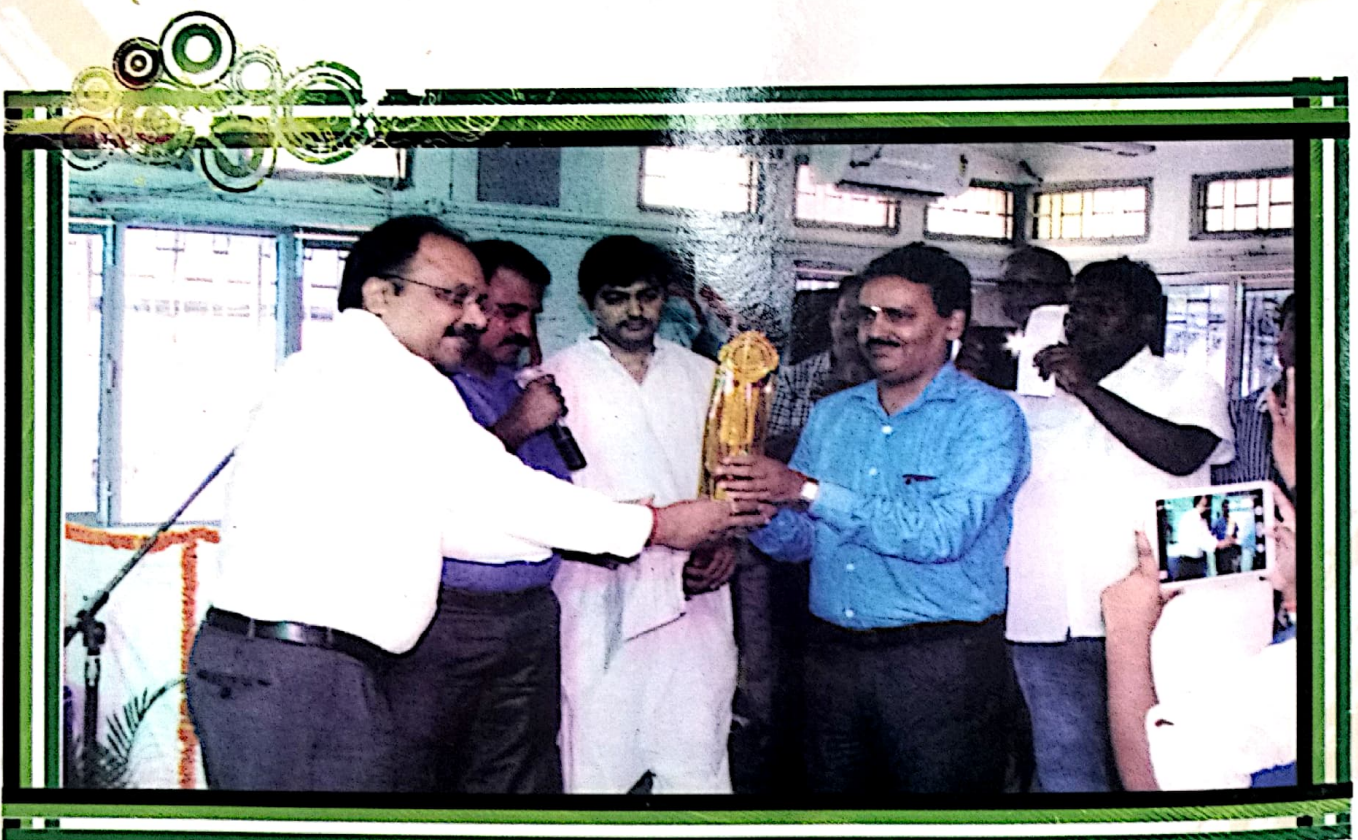
संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के समापन समारोह के शुभ अवसर पर प्रहरी पत्रिका के लोकार्पण के पश्चात् प्रधान महालेखाकार श्री प्रवीण कुमार सिंह, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना एवं श्री संजय कुमार, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार पटना पत्रिका का अवलोकन करते हुए।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के समापन समारोह के शुभ अवसर पर श्री श्रीराम पाण्डेय सहायक ले० अधिकारी-सह-संपादक साहित्यिक गायन परस्तुत करते हुए।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2014 के समापन समारोह के शुभ अवसर पर श्री प्रवीण कुमार सिंह, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना, श्री संजय कुमार, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना एवं श्री मुकेश कुमार लाल वरीय उप महालेखाकार, बिहार पटना (बाँयें से दायें)



15 अगस्त के शुभ अवसर पर श्री संजय कुमार, महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार पटना कैरम प्रतियोगिता विजेताओं को पुरस्कार वितरण करते हुए।